Postal Reg. No.GDP -45/2020-2022

अल्लाह तआला का आदेश

وَلِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۚ يَغْفِرُ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيُعَذِّبُ مَنْ يَّشَآءُ ۚ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ۔

(सूरत आले-इम्रान आयत :130)

अनुवाद: और अल्लाह ही का है जो आकाशों और ज़मीन में है वह जिसे चाहता है क्षमा कर देता है और जिसे चाहता है आज़ाब देता है और अल्लाह बहुत क्षमा करने वाला और बार बार रहम करने वाला है।

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

वर्ष 5

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

Weekly BADAR Qadian HINDI

अंक 25

संपादक शेख़ मुजाहिद अहमद

मूल्य 500 रुपए वार्षिक

25 शव्वाल 1441 हिजरी कमरी 18 इहसान 1399 हिजरी इहसान 18 जून 2020 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल;ल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दोलिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण अपना फ़जल नाज़िल करे। आमीन

अगर ख़ुदा तआला से सच्चा सम्बन्ध,हक़ीक़ी वास्ता क़ायम करना चाहते हो तो नमाज़ पर अनुकरण करने वाले बन जाओ और ऐसे करने वाले बनो कि तुम्हारा जिस्म न तुम्हारी ज़बान बल्कि तुम्हारी रूह के इरादे और भावना सब के सब साक्षात नमाज़ हो जाएं।

उपदेश सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

माध्यमों से काम लेना दुआ का विभाग है

सुनो! वह दुआ जिस के लिए اُدْعُوْنِیْٓ اَسْتَجِبْ لَکُمْ (अल-मोमिन: 61) फ़रमाया है इस के लिए यही सच्ची रूह अभीष्ट है। अगर इस विनय और रोने में हक़ीक़त की रूह नहीं तो वह टें टें से कम नहीं है। फिर कोई कह सकता है कि माध्यों की रियाइत ज़रूरी नहीं है? यह एक ग़लत फ़हमी है। शरीयत ने माध्यमों को मना नहीं किया है और सच पूछो तो क्या दुआ माध्यम नहीं? या दुआ का माध्यम नहीं? माध्यम का तलाश अपने आप में ख़ुद एक दुआ है और दुआ अपने आप में महान माध्यम का का चश्मा! इन्सान की ज़ाहिरी बनावट उस के दो हाथ दो पांव की बनावट एक दूसरे की सहायता का एक क़ुदरती रहनुमा है। जब यह नज़ारा ख़ुद इन्सान में मौजूद है फिर किस क़दर आश्चर्य और ताज्जुब की बात है कि وَتَعَاوَنُوْا عَلَى الْبِرِّ وَالتَّقْوٰى(अल-माइद :3) के अर्थ समझने में मुश्किलों को देखे।

हाँ! मैं कहता हूँ कि माध्यम का तलाश करना भी दुआ के द्वारा करो!!! आपसी सहायता के मैं नहीं समझता कि जब मैं तुम्हें तुम्हारे जिस्म के अंदर अल्लाह तआला का एक क़ायम किया गया सिलसिला और पूर्ण रहनुमा सिलसिला दिखाता हूँ, तुम इस से इन्कार करो। अल्लाह तआला ने इस बात को और भी साफ़ करने और वज़ाहत से दुनिया पर खोल देने के लिए अंबिया अलैहेमुस्सलाम का एक सिलसिला दुनिया में क़ायम किया। अल्लाह तआला इस बात पर क़ादिर था और कादिर है कि अगर वह चाहे तो किसी किस्म की सहायता की ज़रूरत उन रसूलों को बाक़ी न रहने दे। मगर फिर भी एक वक़्त उन पर आता है कि مَنْ اَنْصَارِیْٓ اِلَی اللّٰہِ (अस्सफ़:15) कहने पर मजबूर होते हैं।वह एक टुकड़ा रोटी मांगने वाले फक़ीर की तरह बोलते हैं? नहीं।مَنْ اَنْصَارِیْٓ اِلَی اللّٰہِ कहने की भी एक शान होती है। वह दुनिया को माध्यमों की रियायत सिखाना चाहते हैं जो दुआ का एक विबाग है। वर्ना अल्लाह तआला पर उन को कामिल ईमान,उस के वादों पर पूरा यक़ीन होता है। वे जानते हैं कि अल्लाह तआला का वादा कि اِنَّا لَنَنْصُرُ رُسُلَنَا وَالَّذِیْنَ اٰمَنُوْا فِی الْحَیٰوۃِ الدُّنْیَا (अल-मोमिन:52) एक यक़ीनी और विश्वसनीय वादा है। मैं कहता हूँ कि भला अगर ख़ुदा किसी के दिल में मदद का ख़्याल न डाले तो कोई कैसे मदद कर सकता है।

अल्लाह के मामूर का सहायता मांगने का भेद

असल बात यही है कि वास्तविक सहयोग करने वाला और सहायक वही पवित्र हस्ती है, जिसकी शान نِعْمَ الْمَوْلٰى وَنِعْمَ النَّصِيْرُ وَنِعْمَ الْوَكِيْلُ है। दुनिया और दुनिया की मददें उन लोगों के सामने मुर्दा की तरह होती हैं ओर मुर्दा कीड़े के बराबर भी हक़ीक़त नहीं रखती हैं लेकिन दुनिया को दुआ का एक मोटा तरीक़ बतलाने के लिए वे यह राह भी धारण करते हैं। हक़ीक़त में वे अपने कारोबार का मुतवल्ली ख़ुदा तआला ही को जानते हैं और यह बात बिलकुल सच है।وَهُوَ يَتَوَلَّى الصّٰلِحِيْنَ (अल-आराफ़:197) अल्लाह तआला उनको मामूर कर देता है कि वे अपने कारोबार को दूसरों के माध्यम से ज़ाहिर करें। हमारे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम विभिन्न स्थानों पर मदद की नसीहत करते थे, इस लिए कि वह अल्लाह की सहायता का समय था। इस को तलाश करते थे कि वह किस के साथ होती है। यह एक बहुत ध्यान देने योग्य बात है। वास्तव में अल्लाह का मामूर लोगों से मदद नहीं मांगता बल्कि مَنْ اَنْصَارِیْٓ اِلَی اللّٰہِ (अलस्सफ़:15) कह कर वह उस अल्लाह तआला की सहायता का स्वागत करना चाहता है और एक मुलाक़ात के शौक़ से बेक़रार दिल की तरह उस की तलाश में रहता है। अज्ञान और बद किस्मत लोग यह समझते हैं कि वे लोगों से मदद मांगता है, बल्कि इसी तरह पर इस शान में वह किसी दिल के लिए जो इस सहायता का कारण होता है एक बरकत और रहमत का कारण होता है। अत: अल्लाह के मामूर की सहायता मांगने का असल भेद और राज़ यह ही है जो क़यामत तक इसी तरह पर रहेगा। धर्म के प्रचार में अल्लाह के मामूर दूसरों से मदद चाहते हैं। मगर क्यों? अपने फ़र्ज़ को अदा करने के लिए, ताकि दिलों में ख़ुदा तआला की महानता पैदा करे; वर्ना यह एक ऐसी बात है कि क़रीब कुफ़्र के निकट पहुंच जाती है। अगर अल्लाह के अतिरिक्त को मुतवल्ली क़रार दें और उन नफ़ूस क़ुदसिया से ऐसी संभावना? कदापि असम्भव है। मैंने अभी कहा है कि तौहीद तब ही पूरी होती है कि समस्त मुरादों का देने वाला और समस्त बीमारियों का दूर करने वाला और ठीक करने वाला वही एक ज़ात हो। ला इलाह इल्लल्लाह के अर्थ यही हैं। सूफ़ियों ने इस में इलाह के शब्द से महबूब, लक्ष्य, उपास्य अभिप्राय लिया है।

नि:सन्देह असल और सच यूंही है जब तक इन्सान कामिल तौर पर तौहीद पर अनुकरण नहीं करता, इस में इस्लाम की मुहब्बत और महानता क़ायम नहीं होती और फिर मैं असली बात की तरफ़ लौट कर कहता हूँ कि नमाज़ की लज़्ज़त और आनन्द इसे प्राप्त नहीं हो सकता। भरोसा इसी बात पर है कि जब तक बुरे इरादे, नापाक और गंदे मंसूबे भस्म न हों अंहकार और शेख़ी दूर हो कर विनम्रता और विनय न आए, ख़ुदा का सच्चा बंदा नहीं कहला सकता और सम्पूर्ण उबूदीयत के सिखाने के लिए बेहतरीन मुअल्लिम और सर्वोत्तम मार्ग नमाज़ ही है।

शेष पृष्ठ 12 पर

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह अल्ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ का यूरोप का सफर, सितम्बर अक्तूबर 2019 ई (भाग-8)

आजकल दुनिया बड़ी तेज़ी से अपने ख़ुदा से दूर रही है

एक बहुत बड़ी संख्या न सिर्फ धर्म से दूर जा रही है बल्कि ख़ुदा तआला के वजूद की भी इन्कारी है

और इस माहौल में रहते हुए जहां दुनिया के सामानों को सब कुछ समझा जाता है हमारे में से भी कुछ इस माहौल के अधीन आ जाते। ऐसे हालात में हमारी बहुत बड़ी ज़िम्मेदारी बन जाती है कि अपनी हालतों पर ध्यान रखें अपने आपको भी इस माहौल के प्रभाव से बचाएं और अपने बच्चों को भी इस माहौल के से बचाएं।

और ख़ुद अपने आपको भी एक कोशिश से ख़ुदा तआला से निकट करने की कोशिश करें और अपने बच्चों को भी ख़ुदा तआला के क़रीब लाने कोशिश करें

अपने आपको भी दुनिया की गन्दिगयों से बचाएं और अपनी औलादों को भी दुनिया की गन्दिगयों से बचाएं, बच्चों के सामने अपने ऐसे नमूने करें कि बच्चे बड़ों के नमूनों पर चल कर उन राहों पर चलें जो धर्म की तरफ़ ले जाने वाली राहें हैं, जो ख़ुदा तआला का क़ुरब दिलाने वाली राहें हैं।

जो ख़ुदा तआला के वजूद पर ईमान और यक़ीन पैदा करने वाली राहें हैं, जो अल्लाह तआला का प्यार समेट कर दुनिया और आख़िरत संवारने वाली राहें हैं

जलसा सालाना फ्रांस के अवसर पर सय्यदना हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ का औरतों से ईमान वर्धक ख़िताब

(रिपोर्ट: अब्दुल माजिद ताहिर, एडिशनल वकीलुत्तबशीर लंदन)

(अनुवादक: शेख मुजाहिद अहमद शास्त्री)

5 अक्तूबर 2019 दिनांक हफ़्ता(बक्रिया रिपोर्ट)

औरतों के इजलास से ख़िताब

तशह्हुद , ताव्वुज़ और सूरत फ़ातिहा की तिलावत के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: जैसा कि मैंने कल ख़ुत्बा में भी ज़िक्र किया था कि आजकल दुनिया बड़ी तेज़ी से अपने ख़ुदा से दूर जा रही है। एक बहुत बड़ी संख्या न सिर्फ धर्म से दूर जा रही है बल्कि ख़ुदा तआला के वजूद की भी इंन्कारी है और इस माहौल में रहते हुए जहां दुनिया के सामानों को सब कुछ समझा जाता है हमारे में से भी कुछ इस माहौल के अधीन प्रभाव आ जाते हैं। इस में बड़े भी शामिल हैं और बच्चे भी और नौजवान भी। ऐसे हालात में हमारी बहुत बड़ी ज़िम्मेदारी बन जाती है कि अपनी हालतों पर ध्यान रखें अपने आपको भी इस माहौल के प्रभाव से बचाएं और अपने बच्चों को भी इस माहौल के प्रभाव से बचाएं और ख़ुद अपने आपको भी एक कोशिश से ख़ुदा तआला से निकट करने की कोशिश करें और अपने बच्चों को भी ख़ुदा तआला के क़रीब-तर लाने की कोशिश करें। अपने आपको भी दुनिया की गन्दिगयों से बचाएं और अपनी औलादों को भी दुनिया की गन्दिगयों से बचाएं। बच्चों के सामने अपने ऐसे नमूने स्थापित करें कि बच्चे बड़ों के नमूनों पर चल कर उन राहों पर चलें जो धर्म की तरफ़ ले जाने वाली राहें हैं, जो ख़ुदा तआला का क़ुरब दिलाने वाली राहें हैं, जो ख़ुदा तआला के वजूद पर ईमान और यक़ीन पैदा करने वाली राहें हैं, जो अल्लाह तआला का प्यार समेट कर दुनिया और आख़िरत संवारने वाली राहे हैं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: जहां यह मर्दों की ज़िम्मेदारी है कि अपने नमूने स्थापित करें और बहुत सावधानी पूर्वक इस भौतिक दुनिया की चमक दमक में ज़िन्दगी बसर करें वहां यह औरतों की भी ज़िम्मेदारी है। बच्चों की तर्बीयत की ज़िम्मेदारी अल्लाह और इस के रसूल ने औरतों पर डाली है। अगर हमारी औरतें ख़ुदा से प्यार करने वाली हैं। अगर ख़ुदा तआला का भय दिल में रखने वाली हैं तो उनको अपनी नस्लों को सँभालने के लिए इस माहौल में बड़ी मेहनत करने की ज़रूरत है। वक़्फ़ नौ में बहुत सी माताएं अपने बच्चे पेश कर देती हैं तो फिर उनकी तर्बीयत भी उनकी ज़िम्मेदारी है लेकिन अगर हर बच्चे की तर्बीयत की तरफ़ ध्यान नहीं और वक़्फ़ नौ और ग़ैर वक़्फ़ नौ हर बच्चा पर नज़र नहीं तो किसी एक की तर्बीयत पर बुरा प्रभाव पड़ेगा या वक़्फ़ नौ की तर्बीयत सही नहीं होगी या ग़ैर वाक़िफ़ नौ की तर्बीयत सही नहीं होगी। इसलिए यह नहीं समझना चाहिए कि सिर्फ वक़्फ़ नौ का विचार रखना है या सिर्फ लड़कों का ध्यान रखना है या सिर्फ लड़कियों को ही रोक-टोक करनी है। कुछ माताएं लड़कों की तरफ़ ध्यान अधिक देती हैं या कुछ माताएं ऐसी हैं जो लड़कों को लाड मे रखती हैं और लड़कियों को रोक-टोक करती हैं। अगर तर्बीयत में यह मतभेद है, अगर कोई भेद रखा जा रहा है तो कोई न कोई बच्चा फिर बिगड़ जाता है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: इस माहौल में तर्बीयत बड़ा हस्सास मामला है। इसलिए बहुत सोच समझ कर तर्बीयत का हर क़दम उठाना होगा। मर्द अगर अपनी ज़िम्मेदारी सही तरह नहीं सँभाल रहे और उनके अनुकरण बच्चों पर, खासतौर पर लड़कों पर ग़लत प्रभाव डाल रहे हैं तो उन मर्दों को भी समझाएँ , अपने पतियों की तरफ़ भी ध्यान करें।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: औरत को घर की निगरान बनने का एक उच्च नमूना बनने की ज़रूरत है। हमें आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि मेरे सहाबा तुम्हारे लिए उस्वा हसना हैं और मर्द भी उस्वा हसना हैं और औरतें भी। यह नहीं कि सिर्फ मर्द ही उस्वा हसना हैं बल्कि औरतें भी आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की बैअत में आने का सम्मान पाया उन्होंने भी अपने नमूने स्थापित फ़रमाए , वे भी पाक नमूना बनें। सहाबियात भी ऐसी थीं जिन्होंने अपनी इबादतों के अनुकरण योग्य नमूने स्थापित किए। ऐसे उदाहरण मिलते हैं कि उन्होंने रातें इबादतों में गुज़ारीं और दिन को रोज़े रखे और फिर उनके पतियों को आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास उनकी शिकायत करनी पड़ी कि मेरी बीवी वो है जो सारी रात इबादत में व्यस्त रहती है और अपनी ज़िम्मेदारियाँ और अधिकार अदा नहीं करतीं और आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को औरतों को समझाना पड़ा कि मध्य रास्ता धारण करो। न ही अधिक तेज़ी कि स्थायी इतना अधिक इबादतों में व्यस्त हो जाओ कि घर की ज़िम्मेदारियाँ न निभा सको ना यह कि दुनिया की तरफ़ ही रग़बत इतनी हो जाए कि धर्म का पता ही कुछ न हो। आप ने फ़रमाया कि मध्य रास्ता धारण करो। अत: अगर शिकायत हुई तो इस बात पर कि हमारी औरतें प्रत्येक समय इबादत करने में व्यस्त रहती हैं। वह माहौल ऐसा था जिसने उन लोगों की एक काया पलट दी थी। औरतों को भी शिकवा अगर मर्दों से हुआ तो यह कि वह सारा दिन रोज़े में रहते हैं और रातों को इबादत करते हैं। अत: रिवायत में आता है कि एक बार एक सहाबिया का हुल्या ऐसा बना हुआ था कि बिलकुल अपना विचार नहीं था, मैले कपड़े थे। न कपड़ों का विचार , न बालों में कंघी , न उस ज़माना के अनुसार कोई

सिंघार। इस आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की एक बीवी ने पूछा जब वह उनके पास आईं कि तुम ने अपना यह क्या हाल बनाया हुआ है? तो उनका जवाब था कि अगर मैं तैय्यार हूँ, अपना हाल ठीक करूँ तो किस के लिए, मेरा पति तो रातों को इबादत करता है और दिन को रोज़े रखता है। मेरी तरफ़ तो इस का कोई ध्यान ही नहीं है,नज़र ही नहीं है। इस आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की हर्म ने आदरणीया पत्नी ने आंहुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सेवा में निवेदन किया कि अमुक शख़्स की बीवी का यह हाल है और उसने अपने पति के बारे में यह बताया है कि इस की इस की तरफ़ कोई ध्यान नहीं। रोज़ों और इबादत में व्यस्त रहता है। इस पर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस शख़्स को फ़रमाया कि तुम्हारी बीवी का भी तुम पर हक़ है। आप ने फ़रमाया कि मैं तुमसे अधिक अल्लाह के निकट हूँ। रोज़े भी रखता हूँ, खोलता हूँ , बच्चों के भी अधिकार अदा करता हूँ, बीवियों के अधिकार अदा करता हूँ, समाज के अधिकार अदा करता हूँ। अत: अपने बीवी बच्चों का भी हक़ अदा करो। अत: कुछ समय बाद वही सहाबिया पहले जिसका हाल बुरा था वह दोबारा एक बार आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की अज़्वाज के पास आईं तो उस वक़्त वह बड़ी तैय्यार हुई हुई थीं और बड़े अच्छे कपड़े थे, ख़ुशबू लगाई हुई थी। उन्होंने पूछा कि आज तुम बड़ी तैय्यार हो , बड़ी बनी संवरी हुई हो। क्या वजह है ? तो उन सहाबिया ने जवाब दिया कि इसलिए आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के कहने पर मेरा पति मेरी तरफ़ ध्यान देता है

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: अत: अपने जन्म के उद्देश्य को पूरा करने के लिए अपनी नस्लों को तबाह होने से बचाने के लिए उनको ख़ुदा तआला के निकट करने के लिए हमें अपनी इबादतों की तरफ़ ध्यान देने की ज़रूरत है हमें अपने अख़लाक़ की तरफ़ ध्यान देने की ज़रूरत है हमें अपने दूसरे पाक नमूने दिखाने की ज़रूरत है। मैंने कल भी ख़ुत्बा में जैसा कि मैंने कहा इस तरफ़ ध्यान दिलाया थी मर्दों को तो मस्जिदों में जाने का हुक्म है कि पाँच वक़्त नमाज़ें बाजमाअत पढ़ो लेकिन औरतों के लिए तो घरों में ही नमाज़ पढ़ने की आज्ञा है और सवाब भी मर्दों के बराबर है जिन को मस्जिदों में जाकर नमाज़ पढ़ने का सवाब मिलता है। अत: इस सहूलत से भी अगर लाभ न उठाएं तो फिर इस से बड़ी बदकिस्मती और क्या होगी? एक अहमदी औरत जिसने ज़माना के इमाम को इसलिए माना है कि इस वक़्त ज़माना में जो फ़ित्ना व फ़साद की हालत है मैंने इस से बच कर रहना है तो फिर आबिदा बनना होगा, अल्लाह तआला की इबादत करने वाला बनना होगा, उस की बन्दगी का हक़ अदा करने वाला बनना होगा। और जब आबिदा बनेंगी , इबादत करने वाली बनेंगी तो तब ही बाक़ी नेकियां करने की भी तौफ़ीक़ मिलेगी, तब ही इस बात की तरफ़ भी ध्यान पैदा होगा कि मैंने अल्लाह तआला और इस के रसूल की सम्पूर्ण फ़रमांबर्दार बनना है। तभी कानेतात में शुमार होगा। आँहज़रत ने फ़रमाया कि औरत अपने घर , अपने पति के घर की निगरान बनाई गई है। वह उस की गैरहाज़िरी में इस के घर और औलाद की निगरानी और सुरक्षा की ज़िम्मेदार है। अत: औलाद की तर्बीयत की ज़िम्मेदारी औरत पर सबसे अधिक डाली गई है कि पति अगर बाहर के कामों में व्यस्त है, घर में नहीं है तो औरत निगरान है। स्कूल से बच्चे घर वापस आए हैं तो औरत की मौजूदगी घर में ज़रूरी है ताकि उनकी ख़ुराक का ध्यान रखे और उनसे फिर स्कूल के हालात भी पूछे और फिर बाक़ी जो तर्बीयत के मामले हैं उनके बारे में बताए।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: पस अहमदी माओं को इस वक़्त कोशिश करनी चाहिए कि वो अपने बच्चों की नफ़सियात को समझते हुए यहां के माहौल के प्रभावों को देखते हुए बच्चों को बुरे और भले का अन्तर और फ़र्क़ बताते हुए तर्बीयत करें। आजकल यहां आज़ादी के नाम पर बच्चों को बचपन से ही ऐसी बातें बता दी जाती हैं जिनका बच्चों से सम्बन्ध ही नहीं होता और बलूग़त की उम्र को पहुंचने से पहले उस की समझ आ ही नहीं सकती उस का इदराक पैदा ही नहीं हो सकता, लेकिन यह बताते हैं। इल्म की रोशनी के नाम पर यह बताया जाता है। इल्म की रोशनी के नाम पर बच्चों को यह लोग अख़लाक़ी अंधेरों में धकेलने की कोशिश कर रहे हैं और यह बातें सिखा रहे हैं और बच्चे इस वजह से अख़लाक़ीयात में अख़लाक़ी अंधेरों में डूब भी रहे हैं। ऐसे हालात में माताओं की पहले से बढ़कर यह ज़िम्मेदारी है कि अपने घरों की निगरान बन कर उन व्यर्थ और बेहूदा बातों के रद्द के लिए पहले तो ख़ुद मालूमात इकट्ठी करें , ख़ुद मालूमात अपने पास रखें और अगर बच्चा स्कूल से सीख के आता है और इस के बारे में सवाल करे तो बिना शर्माए जो कुछ वो सवाल करता है अगर वह बेहूदा किस्म के सम्बन्धों के बारे में सवाल हैं तो उनको बताएं। बताएं कि यह बुराई है और अभी तुम्हारी उस की उम्र नहीं है। इस तरह हम अपने बच्चों की सुरक्षा और निगरानी कर सकते हैं, नहीं तो यह दुनिया-दार माहौल हमारी नस्लों की दुनिया तथा आख़रत बर्बाद कर देगा

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: अत: हर अहमदी को बड़ी फ़िक्र के साथ इस तरफ़ ध्यान देने की ज़रूरत है। हर अहमदी औरत को अपने नमूनों के साथ और दुआओं के साथ ऐसे उत्तम और आला स्तर की तर्बीयत की ज़रूरत है कि कहा जा सके कि यह माताएं तो एक ऐसा वजूद है जो अल्लाह तआला के फ़ज़्लों को समेटकर अपनी औलाद को एक क़ीमती सरमाए की सूरत में जमाअत को दे रही हैं। यह औलादें , यह बच्चे आपके पास जमाअत की अमानत हैं और उनकी तर्बीयत की वजह से यह सब बच्चे ख़ुदा तआला के पसंदीदा माल बन चुके हैं। यह लोग हैं जिन पर अल्लाह तआला के प्यार की नज़र हर-आन पड़ती रहती है जो अपने पाकीज़ा ज़हन की वजह से दुनिया की गन्दगियों की तरफ़ नज़र उठा कर भी नहीं देखते। उन्हें टीवी और इंटरनैट के व्यर्थ बेहूदा और नंगे और ग़लत प्रोग्रामों से कोई शौक़ नहीं है। उन्हें अगर दिलचस्पी है तो ख़ुदा तआला के फ़ज़्ल को तलाश करने की दिलचस्पी है। यह दुनिया कहे कि यह वह बच्चे हैं कि अगर दिलचस्पी है तो बेहूदगियों से दिलचस्पी नहीं, लग़वयात से दिलचस्पी नहीं , वक़्त नष्ट करने से दिलचस्पी नहीं, आवारागर्दी करने से दिलचस्पी नहीं , बाहर लड़कों में फिर कर नशा करने वाली चीज़ें प्रयोग करने से दिलचस्पी नहीं , बल्कि दिलचस्पी है तो ख़ुदा तआला के फ़ज़्ल को तलाश करने से दिलचस्पी है। अगर फ़िक्र है तो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के साथ अल्लाह तआला के इस वादा का हिस्सा बनने की कि मेरे मानने वाले इल्म तथा मअरफ़त में तरक़्क़ी करने वाले हैं। यह अल्लाह तआला का वादा है और तरक़्क़ी करने वाले बन कर दुनिया की रहनुमाई करने वाले और दुनिया को दज्जाली फ़ित्नों से बचाने वाले बनेंगे। अत: ऐसे खज़ाने और ऐसे वजूद पैदा करने वाले बनें। ऐसी मुमन्ना बीवियां और माताएं बनें जिनके बारे में आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि वे बेहतरीन माल में से हैं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: इसी तरह माताएं यह भी याद रखें कि लड़कियों की तर्बीयत के लिए उनको अपने भी नमूने दिखाने होंगे , खासतौर पर अपने लिबास और अपने पर्दे का भी उन्हें विचार रखना होगा। हया औरत की निशानी है। लड़कियों को बताएं कि यह तथा कथित तरक़्क़ी करने वाला समाज तुम्हारी लज्जा की सुरक्षा नहीं करता। बचपन से ही बताना होगा , पाँच छ: साल की उम्र से ही बच्चियों को बताना होगा कि यह समाज तुम्हारी लज्जा की सुरक्षा नहीं करता। लज्जा की सुरक्षा अल्लाह तआला के बताए हुए हुक्मों पर चल कर ही हो सकती है। इसलिए अल्लाह तआला ने क़ुरआन करीम में पर्दे का भी हुक्म फ़रमाया है और हया का भी हुक्म दिया है। हमेशा बच्चियों को यह

अल्लाह तआला का उपदेश

رَبَّنَآ اِنَّنَآ اٰمَنَّا فَاغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَا وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ (आले इम्रान 17)

हे हमारे रब्ब निसन्देह हम ईमान ले आए

अतः हमारे गुनाह माफ कर दे और हमें आग के अज़ाब से बचा।

तालिबे दुआ

MUHAMMAD MAJEED AND FAMILY

AMEER DIST: ROUPR. PUNJAB

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

"अगर तुम चाहते हो कि तुम्हें दोनों दुनिया की फत्ह हासिल हो और लोगों के दिलों पर फत्ह पाओ तो पवित्रता धारण करो, और अपनी बात सुनो, और दूसरों को अपने उच्च आचरण का नमूना दिखाओ तब अलबत्ता सफल हो जाओगे।"

तालिबे दुआ

धानू शेरपा

सैक्रेट्री जमाअत अहमदिया देवदमतांग (सिक्कम)

बताएं कि अल्लाह तआला के इस हुक्म को हमेशा अपने सामने रखो। इस बारे में किसी एहसास कमतरी में आने की ज़रूरत नहीं, दिल में किसी एहसास कमतरी को पैदा करने की ज़रूरत नहीं। अगर माताएं ख़ुद अपने पर्दों की सुरक्षा करेंगी और लड़कियों को इस का महत्त्व बताएँगी तो यक़ीनन बच्चियों पर भी इस का नेक प्रभाव होगा।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया :कुछ पढ़ी लिखी लड़कियां समझती हैं कि हमारी माताएं पुराने ज़माना की हैं। उन्हें क्या पता कि इस ज़माना के साथ चलने के लिए पर्दा और हिजाब को नरम करने की ज़रूरत है या कुछ स्थानों पर न भी अगर पर्दा किया जाए, न भी यह शर्म वाला लिबास पहना जाए तो कोई हर्ज नहीं। लेकिन हमें हमेशा यह याद रखना चाहिए कि जो अल्लाह तआला के हुक्मों से हट कर चलेगा वह अपनी और अपनी नस्लों की ज़िन्दगियों को बर्बाद करेगा। इसलिए बिना किसी एहसास कमतरी के एक अहमदी लड़की और औरत को इस लिबास पर लानत भेजते हुए तर्क कर देना चाहिए जिससे लज्जा में कमी आती हो, जो लिबास अल्लाह तआला के हुक्मों की नफ़ी करता हूँ। अगर किसी को यह बहाना है कि काम के लिए कुछ किस्म के लिबास पहनने पड़ते हैं और वह लिबास बलाउज़ और जीन्ज़ के अतिरिक्त कुछ है ही नहीं और स्कार्फ भी नहीं लिया जा सकता और ऊपर कुछ लंबा कोट नहीं पहना जा सकता तो फिर ऐसे काम से हमारी लड़कियों को बचना चाहिए जो नंगे लिबास की तरफ़ लेकर जाने वाला है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: अगर अल्लाह तआला के मुतवल्ली होने पर ईमान रखेंगी और सालेहात में से बनने की कोशिश करेंगी तो फिर अल्लाह तआला अपने वादा के अनुसार सालेहा का मुतवल्ली भी होगा। आज अगर पर्दे से आज़ाद हो जाएं तो अगली नस्लें और अधिक आज़ादी में चली जाएँगी और फिर धर्म से दूर हट जाएँगी। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के इस इरशाद को हमेशा सामने रखें कि "यूरोप की तरह बेपर्दगी पर लोग ज़ोर दे रहे हैं लेकिन यह हरगिज़ मुनासिब नहीं।"आपने फ़रमाया"यह हरगिज़ मुनासिब नहीं, यही औरतों की आज़ादी और दुराचार की जड़ है।" यही ज़रूरत से अधिक आज़ादी देती है और यही है जो धर्म से दूर ले जाने वाली और धर्म के हुक्मों से दूर करने वाली है और उस की जड़ यह आज़ादी है। इसलिए बहुत सोच समझ कर हर क़दम उठाने की है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया अत: हमेशा याद रखें कि अगर अल्लाह तआला की बातों, इस के रसूल की बातों और इस ज़माना के इमाम और हक्म और अदल की बातों पर ध्यान से अनुकरण नहीं करेंगी तो अपना धर्म गंवा देंगी। फिर यह दावा भी ग़लत होगा कि हमने मसीह मौऊद की बैअत की है। इस माहौल में शरमाने की बजाय उन लोगों को जो दुनिया-दार हैं खुल कर बताएं कि पर्दा हमारा धार्मिक मामला है और तुम हमारे धर्म के मामले में दख़ल न दो। यहां की पढ़ी लिखी अहमदी लड़कियां अख़बारों में इस बारे में ख़त लिखें, निबन्ध लिखें।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: हमेशा याद रखें अल्लाह तआला के हुक्मों पर अनुकरण करेंगी तो धर्म व दुनिया में इज़्ज़त पाएँगी। अत: ख़ुद अपने जायज़े लीं, सिर्फ़ मस्जिद आने के लिए और जलसों पर आने के लिए हयादार लिबास और पर्दे न हूँ बल्कि यह आपकी एक अलग विशेषता हो। जहां भी हों आपका एक हयादार लिबास हो। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की इस बात को हमेशा याद रखें कि तक़्वा धारण करो, दुनिया और इस की सुन्दरता से बहुत दिल मत लगाओ। कोशिश करो कि सारी उम्र मासूम और पाक दामन होने की हालत में क़ब्रों में दाख़िल हो। फ़रमाते हैं "ख़ुदा के फ़राइज़ नमाज़ ज़कात इत्यादि में सुस्ती मत करो।" फ़रमाया कि "अपनी इस ज़िम्मेदारी को ऐसी उम्दगी से अदा करो कि ख़ुदा के निकट सालिहात कानतात में हो जाओ।"

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया अल्लाह तआला करे कि हर अहमदी औरत और हर अहमदी बच्ची धर्म को दुनिया पर मुक़द्दम रखते हुए अल्लाह तआला और इस के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के हुक्मों और आदेशों पर चलते हुए अपने और अपनी नस्लों के धर्म की सुरक्षा करने वाली और उन्हें ख़ुदा तआला के साथ जोड़ने वाली हो अल्लाह तआला ने इस ज़माना के इमाम को मानने का जो आपको सम्मान दिया है इस की हमेशा आप क़दर करने वाली हूँ और दुनिया में डूब कर इस से दूर न हट जाएं आमीन।

आख़िर पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने दुआ करवाई। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ का लज्ना यह ख़िताब 1 बजकर 40 मिनट तक जारी रहा। दुआ के बाद लज्ना और बच्चियों के विभिन्न ग्रुपों ने अरबी, उर्दू, फ्रैंच भाषा में तराने और दुआइया नज़्में प्रस्तुत कीं। आख़िर पर अफ्रीकन औरतों ने अपने विशेष अंदाज़ में कलिमा तय्यबा का विर्द किया और नारे लगाए ।

इस के बाद 2 बजे सय्यदना हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने मर्दाना जलसा गाह में तशरीफ़ ला कर नमाज़ ज़ुहर तथा असर जमा कर के पढ़ाई नमाज़ों की अदा करने के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ अपनी रिहायश गाह पर तशरीफ़ ले गए

फ्रैंच मेहमानों के साथ प्रोग्राम

प्रोग्राम के अनुसार 6 बजकर 40 मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ मर्दाना मार्की मैं तशरीफ़ लाए और फ्रैंच मेहमानों के साथ प्रोग्राम शुरू हुआ। आदरणीय अता-उलहई साहिब ने तिलावत क़ुरआन करीम की और इस के बाद उस का फ्रैंच भाषा में अनुवाद प्रस्तुत किया। इस के बाद आदरणीय आसिफ़ आरिफ़ साहिब नैशनल सैक्रेटरी अमूरे आमा फ्रांस ने अपना परिचयात्मक सम्बोधन किया।

इस के बाद सबसे पहले Trie Chateau के मेयर Mr David ने अपना सम्बोधन प्रस्तुत किया जिसमें उन्होंने कहा: ख़लीफ़ा की इस छोटे से शहर Trie Chateau मैं आना हमारे लिए बहुत ख़ुशी और सम्मान का कारण है। इस कम्यूनिटी की भलाई और जमाअत अहमदिया के साथ सम्बन्धों में वृद्धि के लिए अमन का पैग़ाम बहुत अहम है। मुझे उम्मीद है कि मौसम की ख़राबी के बावजूद भी आप इस जलसा से आनन्दित होंगे जो कि एक ऐसी स्थान पर आयोजित हो रहा है जो पैरिस के निकट है और बहुत ख़ुशगवार स्थान है। मुझे उम्मीद है कि आप लोग हमें जानेंगे और अपना परिचय हमें करवाएंगे। अत: मैं आप लोगों का और विशेष रूप से ख़लीफ़ा की इस अवसर पर तशरीफ़ लाने पर शुक्रिया अदा करना चाहता हूँ। आप सब का शुक्रिया।

इस के बाद डाक्टर Annelise Defaix साहिबा ने अपना सम्बोधन प्रस्तुत किया। महोदया पैरिस यूनीवर्सिटी के साथ जुड़ी हुई हैं और साउथ वैस्ट एशीयन डिपार्टमैंट में काम करती हैं। महोदया ने कहा: मैं पेशा के एतबार से सोशियालोजिस्ट हूँ और मुसलमान अक़ल्लीयतों पर विशेष रूप से काम कर रही हूँ। इस ग़ैरमामूली आयोजन में दावत पर आपका शुक्रिया अदा करना चाहती हूं। मैं 10 साल से अहमदियों को जानती हूँ। सबसे पहले मेरी अहमदियों के साथ मुलाक़ात इंडोनेशिया में हुई जहां उन्हें विरोध का सामना था। मैं उनसे बहुत प्रभावित हुई थी। फिर मुझे कम्बोडिया में भी अहमदी मिले। मैं Saint Prix में भी तीन साल से अहमदियों से मिल रही हूँ और धार्मिक अक़ल्लीयतों के atlas मैं अहमदियों के बारे में एक

दुआ का अभिलाषी
जी.एम. मुहम्मद शरीफ़
जमाअत अहमदिया मरकरा (कर्नाटक)

इस्लाम और जमाअत अहमदिया के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 3010 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

इस्लाम की वास्तविक शिक्षाओं का दहश्तगर्दी और उग्रवाद से कोई सम्बन्ध नहीं बल्कि इस्लाम तो अमन, प्यार, सहनशीलता और सुलह का धर्म है।

"इस्लाम" का शब्दिक अर्थ ही "अमन और सलामती" है, अतः एक वास्तविक मुसलमान वही है जो कि ख़ुद भी अमन वाला है और दुनिया में भी अमन तथा प्यार स्थापित करने की कोशिश में रहता है।

क़ुरआन करीम ने किसी एक स्थान भी इन्कार करने वालों के ख़िलाफ़ फ़साद और ताक़त के प्रयोग की शिक्षा नहीं दी बल्कि मुसलमानों को बर्दाश्त और सब्र की शिक्षा दी है

अतः आजकल के तथा कथित मुसलमान रहनुमा या इस्लामी हुकूमतें जो उग्रवाद और जुनूनीयत का प्रदर्शन करती हैं, इस का आरोप उन्हीं के सिर पर है

उनके फ़रेबी और मकरूह व्यवहारों को, जिनके कारण दुनिया का अमन और भाईचारा तबाह हो रही है, किसी भी अवस्था में जायज़ क़रार नहीं दिया जा सकता।

किसी का ज़बरदस्ती धर्म तबदील करना ज़ुल्म तथा अत्याचार के द्वारा दूसरों पर फ़तह प्राप्त करना सख़्ती से मना है बल्कि अमन और समाज की सूरक्षा के ख़िलाफ़ कोई भी नुकसान पहुंचाने वाला काम मना है।

रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हर अवसर पर नर्मी और विनय का मुज़ाहरा फ़रमाया आपने सिखाया कि सच्चा मुसलमान वह है जिसकी ज़बान और हाथ से दूसरे सुरक्षित हैं।

अगर दुनिया में अमन और तहफ़्फ़ुज़ की कमी का आरोप इस्लाम पर डाला जाता रहा तो दुनिया की यह ग़ैर-मुस्तहकम अवस्था और अधिक बिगाड़ का शिकार होती रहेगी

किसी धर्म या उस के अनुयायियों पर हमला करने से इस अन्तर में और अधिक वृद्धि ही होगा, इस से सिर्फ इंतिहापसंदों का हौसला बढ़ेगा जिससे समस्त जमाअतों और अक़ीदों के मध्य नफ़रत की आग भड़काने की कोशिशों में और अधिक वृद्धि होती जाएगी।

अपने दिल की गहराईयों से दुआ करता हूँ कि अल्लाह करे कि दुनिया वाले साझे लाभ के लिए इकट्ठे हों और इत्तिहाद के साथ काम करें और आपसी भरोसा और सुलह को परवान चढ़ाएं।

आईए हम सब धर्म पर आरोप लगाने या एक दूसरे पर उंगलियां उठाने की बजाय मिलकर अपनी समस्त ताक़त अमन की स्थापना के लिए खर्च करें और अपनी अगली नस्लों के लिए सुरक्षित भविष्य छोड़कर जाएं।

फ्रैंच मेहमानों से हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ का ईमान वर्धक ख़िताब।

अध्याय लिखा है। इस वक़्त हमारा देश मुसलमानों के हवाला से एक नाज़ुक दूर से गुज़र रहा है जिसका उदाहरण पहले कभी नहीं मिलता और ऐसे वक़्त में ख़लीफ़ा ने जो पैग़ाम दिया है वो हमारे दिलों के लिए राहत का कारण बना है और इस अन्धेरे वाले दौर से निकलने के लिए हमारे अंदर जज़बा पैदा करता है। फ्रांस में इस्लामोफोबिया बहुत आम हो चुका है लेकिन अमन और प्यार कभी अलग नहीं हो सकते। अस्सलामो अलैकुम

इसके बाद डाक्टर Langewish Katrine साहिबा जो कि Anthropologist हैं और यूनीवर्सिटी आफ़ Jonnas Gutenberg मैं अफ्रीकन स्टडीज़ की इंचार्ज हैं ने अपना सम्बोधन प्रस्तुत किया जिसमें उन्होंने कहा मेरी जमाअत अहमदिया से मुलाक़ात वैस्ट अफ्रीक़ा के देश बोरकीना फासो में स्थित उनके एक हस्पताल में हुई थी। इसके बाद मैंने इस जमाअत के साथ अपना सम्पर्क बहाल रखा और फिर फ्रांस, जर्मनी और अन्य देशों में भी इस जमाअत को देखा। बतौर Anthropologist मैं जमाअत के फ़लाही मन्सूबों विशेष रूप से ह्यूमैनिटी फ़र्स्ट में बहुत अधिक दिलचस्पी लेती हूँ और इस जमाअत का रूहानियत की तलाश और फ़लाही कामों में साथ साथ चलना बहुत ही उच्च चीज़ है। इसलिए मुझे ख़लीफ़ा की मौजूदगी में आज इस जलसा में शामिल होने कर के बहुत ख़ुशी मिल रही है। आप लोगों को शायद बोरकीना फासो में प्रकाशित होने वाली मेरी एक किताब अच्छी लगे जिसका एक अध्याय ही जमाअत अहमदिया के बारे में है।

5 अक्तूबर 2019 दिनांक हफ़्ता

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने 6 बजकर 53 मिनट पर अंग्रेज़ी भाषा में ख़िताब फ़रमाया जिस का उर्दू से हिन्दी अनुवाद प्रस्तुत है।

ख़िताब हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़

तशह्हुद, ताव्वुज़ और तसमिया के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: आप सब पर अल्लाह तआला की रहमतें और सलामती हों। सबसे पहले तो मैं समस्त मेहमानों का शुक्रिया अदा करना चाहूँगा जो कि एक मुसलमान कम्यूनिटी की तरफ़ से आयोजित ख़ालिस धार्मिक आयोजन में शामिल हुए हैं। वर्तमान कुछ सालों में कुछ तथाकथित मुसलमान गिरोहों के अत्याचारपूर्ण और घिनौने अत्याचार फ्रांस सहित विभिन्न देशों में बहुत अधिक दुःख और तकलीफ़ पहुंचाने का कारण बने हैं। इस तरह के हमलों की भरपूर निन्दा ही की जा सकती है और हमारी दुआएं और सहानुभूतियां हमेशा ज़ुल्म तथा अत्याचार का शिकार होने वाले उन लोगों के साथ रहेंगी।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया इस्लाम की वास्तविक शिक्षाओं का दहश्तगर्दी और उग्रवाद से कोई सम्बन्ध नहीं बल्कि इस्लाम तो अमन, प्यार, धैर्य और सुलह का धर्म है।"इस्लाम" का शब्दी अर्थ ही "अमन और सलामती" है। अतः एक वास्तविक मुसलमान वही है जो कि ख़ुद भी अमन वाला है और दुनिया में भी अमन तथा प्यार स्थापित करने की कोशिश में लगा रहता है। मुसलमानों को इंतिहाई बुनियादी सतह पर यही शिक्षा दी गई है कि जब दूसरों को चाहे वो मुसलमान हैं या ग़ैर मुस्लिम, मिलें तो "अस्सलामो अलैकुम" कहीं जिसका अर्थ ही यह है कि "आप पर सलामती हो।" मिलने का यह इस्लामी तरीक़ा ख़ैर ख़्वाही की निशानी है जो कि दूसरे को अमन और सलामती का पैग़ाम देता है। बल्कि मैंने कई ग़ैर मुस्लिमों को भी देखा है जिनके मुसलमान दोस्त या परिचित होते हैं और वे उन्हें इस्लामी तरीक़ा के अनुसार "सलाम" कह कर मिलते हैं। बहरहाल यह संभव नहीं है कि हमारा धर्म हमें प्रत्येक अम्न तथा सलामती भेजने की नसीहत करता हो और साथ ही हमसे यह भी मांग करे कि लोगों के विरोध में उनके अधिकार छीनने वाले हों और उनके ख़िलाफ़ क्रोधित हो कर हथियार लेकर खड़े हो जाएं। यह नामुमकिन है कि इस्लामी शिक्षाओं में इस क़दर मतभेद पाया जाए। इसलिए यह स्पष्ट रखें कि हर किस्म का उग्रवाद और अत्याचार इस्लामी शिक्षाओं के सरासर ख़िलाफ़ है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: इस्लाम की हक़ीक़त समझने के लिए ज़रूरी है कि इस्लाम के संस्थापक हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ज़माना पर ग़ौर किया जाए। जब आप ने अल्लाह तआला के नबी होने का दावा फ़रमाया तो आप और आप के सहाबा का बहुत विरोध और हिंसक अत्याचार का शिकार बने। अव्वलीन मुसलमानों में से सिर्फ कुछ एक का ही सम्बन्ध इज़्ज़तदार और मालदार ख़ानदानों से था लेकिन अधिकतर संख्या ग़रीबों और ग़ुलामों की थी। मक्का के कुफ़्फ़ार उन लोगों को डराने और धमकाने के लिए उन पर बहुत ज़ुल्म तथा अत्याचार करते। रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम महान धैर्य तथा हौसला के साथ इस ग़ैर इन्सानी सुलूक और कठोर नाइंसाफ़ियों को बर्दाश्त करते रहे और अपने अनुयायियों को भी

इसी बात की नसीहत फ़रमाते रहे। उदाहरण के तौर पर एक अवसर पर रसूल करीम ने एक मुसलमान मियां बीवी और उनके छोटे बच्चे को देखा कि कुफ़्फ़ार उन्हें मार पीट रहे थे और उन पर ज़ुल्म ढा रहे थे। इस कट्टरता और ज़ुल्म तथा बरबरीयत के बावजूद रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उन्हें इन अत्याचारों को सब्र तथा दृढ़ता के साथ बर्दाश्त करने की नसीहत फ़रमाई। आप ने न तो उनको बदला लेने का हुक्म दिया और न ही अन्य मुसलमानों को इन कुफ़्फ़ार का मुक़ाबला करने के लिए बुलाया बल्कि आप ने तो अपने सहाबा रज़ी अल्लाह अन्हुम को अमन वाला रहने का इरशाद फ़रमाया चाहे उन की जान भी चली जाए। आप ने उन्हें इस बात की नसीहत फ़रमाई कि उन्हें उस का बदला आख़रत में अल्लाह तआला के हुज़ूर हाज़िर हो कर मिलेगा।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: अत: रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और आप के सहाबा कई साल तक यह ज़ुल्म तथा अत्याचार सहन करते रहे जब तक कि हिजरत कर के मदीना नहीं चले गए ताकि वहां पर आज़ादी के साथ अपने धर्म पर अनुकरण कर सकें और अमन वाला ज़िन्दगियां गुज़ार सकें। लेकिन हिजरत को अधिक समय नहीं हुआ था कि मक्का के कुफ़्फ़ार मुसलमानों का पीछा करते हुए उनके नए वतन भी पहुंच गए और वहां भी मुसलमानों के ख़िलाफ़ जंग शुरू कर दी। अत: तब पहली बार अल्लाह तआला ने मुसलमानों को मुक़ाबला करने की आज्ञा प्रदान फ़रमाई और इस आज्ञा का ज़िक्र क़ुरआन करीम की सूर अल-हज्ज आयात 40 और 41 मैं मिलता है। इन आयतों में अल्लाह तआला वर्णन फ़रमाता है कि जंग करने की आज्ञा इसलिए दी गई है कि लोगों की तरफ़ से मुसलमानों पर हमले किए जा रहे हैं और यह लोग सिर्फ इस्लाम को ही नहीं बल्कि धर्म को ही धरती से ख़त्म कर देना चाहते थे। क़ुरआन करीम कहता है कि अगर मुसलमानों की प्रतिरक्षा करने की आज्ञा न दी जाती तो कोई भी कलीसा, गिरजा, मंदिर, मस्जिद और किसी भी धर्म की कोई भी इबादत गाह सुरक्षित न रहती। अत: अगर रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और आप के सहाबा को विवश होकर जंगों में हिस्सा लेना पड़ा तो यह समस्त लोगों के अधिकार की सुरक्षा की लिए था। यह इसलिए था कि इस बात की यक़ीन दहानी करवाई जाए कि ईसाई, यहूदी, हिंदू, मुसलमान और दूसरे धर्मों तथा अक़ीदों के लोगों को अपने अपने अक़ीदा के अनुसार अपनी इच्छा से इबादत करने का हक़ प्राप्त हो

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: जैसा कि आरोप लगाया जाता है कि अगर इस्लाम ने मुसलमानों को ज़बरदस्ती अपनी शिक्षाओं फैलाने और देशों पर क़ब्ज़ा करने और अन्य धर्मों को ख़त्म करने की आज्ञा दी होती तो क़ुरआन करीम उतना खुल कर क्यों कहता कि अन्य धर्मों की सुरक्षा करना और अन्य धर्मों के मानने वालों के अधिकार की सुरक्षा करना मुसलमानों का धार्मिक फ़रीज़ा है। हक़ीक़त तो यह है कि आरम्भिक मुसलमानों ने व्यक्तिगत धार्मिक आज़ादी के स्थायी उसूल स्थापित करने के लिए अपनी जानें तक दे दें। यह आज़ादियां इस्लामी अक़ीदा की बुनियाद हैं और हमेशा के लिए क़ुरआन करीम में सुरक्षित हो चुकी हैं। क़ुरआन करीम की सूरा बक़रा की आयत 257 मैं अल्लाह तआला स्पष्ट रूप से फ़रमाता है कि "धर्म में कोई जबर नहीं है।" यह विचार की आज़ादी, धर्म की आज़ादी और सोच की आज़ादी के हक़ में बड़ा स्पष्ट वर्णन है जिसमें किसी किस्म की शंका नहीं पाई जाती।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: इस्लाम धर्म के संस्थापक सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और ख़ुलफ़ाए राशिदीन के दौर में ग़ैर मुस्लिम लोगों की कभी अधिकार नहीं छीने गई और न ही उन्हें इस्लाम स्वीकार करने पर मजबूर किया गया या उन्हें अपनी रिवायातों व अक़ीदों को छोड़ने पर मजबूर किया गया। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम सारी उम्र अमन, धर्मों के मध्य वार्तालाप और विभिन्न क़ौमों के मध्य सुलह और आपसी इज़्ज़त व सम्मान के इच्छुक रहे। उदाहरण के तौर पर हिजरत मदीना के बाद आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने यहूदियों से एक मुआहिदा किया, जिसके अधीन एक साझी हुकूमत स्थापित की गई और इस्लाम के संस्थापक को मुत्तफ़िक़ा तौर रियासत का सर्वोच्च चुना गया। इस मुआहिदा की शर्तों के अनुसार मुसलमानों और यहूदियों ने रियासत के साथ सहयोग करने और वफ़ादार शहरी बनने का अह्द किया। इस मुआहिदा के तहत प्रत्येक को अपने धर्म और अक़ीदों पर बिना किसी भय, तकलीफ़ या पाबंदी के अनुकरण करने का हक़ दिया था। आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने कभी भी इस मुआहिदा के ख़िलाफ़ नहीं किया। जबकि दूसरी तरफ़ कुछ ऐसे अवसर आए कि ग़ैर मुस्लिमों ने इस मुआहिदा के ख़िलाफ़ किया और फिर पहले से ही निर्धारित कानूनों के अनुसार उन्हें सज़ा दी गई।

हुज़ूर अनवर उदय अल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: इस्लाम ने कभी भी अपने अनुयायियों को यह आज्ञा नहीं दी कि वह ताक़त के द्वारा अपना अक़ीदा फैलाईं और न ही किसी मुसलमान हुकूमत और रहनुमा को यह आज्ञा दी कि वह यह ऐलान करें कि यहां सिर्फ मुसलमानों को रहने की आज्ञा है। जैसा कि मैंने बताया है कि मीसाक़ मदीना के तहत हर क़ौम को अपनी रिवायतों और अक़ीदों पर अनुकरण करने की आज़ादी थी। वह समाज एक अहम उसूल पर एक साथ थे कि हर कोई बिना किसी भेद के धर्म तथा अक़ीदा अपनी अपनी ज़िम्मेदारी से अदा करेगा और रियासत का वफ़ादार शहरी बन कर रहेगा और हर इस काम से बचेगा जिससे समाज के अमन तथा सुरक्षा को ख़तरा हो। इसलिए यह बिलकुल ना इंसाफ़ी है कि सीमित कुछ मुसलमानों के गुमराह करने वाले और बुरे कर्मों का आरोप इस्लाम की अम्न पसन्द शिक्षा पर डाला जाए। यह लोगों और संस्थाऐं जो इंतिहापसंद हैं और जिनके व्यक्तिगत लाभों दहशतगर्दी और उग्रवाद से जुड़े हैं , उनका इस्लाम से कोई भी सम्बन्ध नहीं है। वे बे-शक अपने नफ़रत से भरे हुए कामों को इस्लाम के नाम पर जायज़ क़रार दें, लेकिन हक़ीक़त यह है कि वह सिर्फ और सिर्फ क़ुरआन करीम इस्लाम धर्म के संस्थापक सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की पाकीज़ा और अम्न पसन्द शिक्षाओं को बदनाम करते हैं

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: क़ुरआन करीम का प्रत्येक पृष्ठ इस रोशन शिक्षा से भरा है जिसके अनुसार मुसलमानों को चाहिए कि वो दुनिया में अमन स्थापित करने का कोई अवसर हाथ से न जाने दें। जैसे क़ुरआन करीम की सूरा ज़ख़रफ़ आयात 89 और 90 में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की इन दर्द-भरी और वेदना भरी दुआओं का ज़िक्र किया गया है जिनमें आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ख़ुदा तआला से इल्तिजा कर रहे हैं कि वह जो प्यार भरी और सच्ची शिक्षा लोगों के सामने प्रस्तुत कर रहे हैं इस का इन्कार हो रहा है। जवाब में अल्लाह तआला ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को उन लोगों से दर गुज़र करने और अमन का पैग़ाम फैलाते रहने की नसीहत की गई है

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: शब्द "इस्लाम" का अर्थ है कि ईमान लाना और अमन फैलाना। और इस दृष्टि से अल्लाह तआला ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को इस्लाम का पैग़ाम पहुंचाने और बाक़ी मामला अल्लाह पर छोड़ने और जिन लोगों ने इस पैग़ाम को मुस्तर्द क्या, उन्हें निरन्तर अमन देते रहने की नसीहत फ़रमाई। क़ुरआन करीम ने किसी एक स्थान भी इन्कार करने वालों के ख़िलाफ़ फ़साद और ताक़त के प्रयोग की शिक्षा नहीं दी बल्कि मुसलमानों को बर्दाश्त और सब्र की नसीहत की है। अत: आजकल के तथाकथित मुसलमान रहनुमा या इस्लामी हुकूमतें जो उग्रवाद और जुनूनीयत का प्रदर्शन करती हैं, इस का आरोप उन्हीं के कंधों पर है। उनके फ़रेबी और मकरूह व्यवहारों को, जिनके कारण दुनिया का अमन और भाईचारा तबाह हो रहा है, किसी भी अवस्था में जायज़ क़रार नहीं दिया जा सकता और न ही उस की किसी तरह जायज़ कहा जा सकता है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: इस्लामी शिक्षा इस बारे में स्पष्ट है कि किसी का ज़बरदस्ती धर्म तबदील करना ज़ुल्म तथा अत्याचार के द्वारा दूसरों पर फ़तह प्राप्त करना सख़्ती से मना है। बल्कि अमन और समाज की सुरक्षा के ख़िलाफ़ कोई भी हानि पहुंचाने वाला कर्म मना है। रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हर अवसर पर नर्मी और विनय का मुज़ाहरा फ़रमाया। आपने सिखाया कि सच्चा मुसलमान वह है जिसकी ज़बान और हाथ से दूसरे सुरक्षित हैं। आप ने यहां अन्तर नहीं किया कि मुसलमान सिर्फ मुसलमानों से सहानुभूति और रहम का सुलूक करें। बल्कि स्पष्ट तौर पर फ़रमाया कि अक़ीदों के अन्तर से ऊंचा होकर समाज के समस्त लोगों को सुरक्षा प्रदान करना चाहिए। अत: वह कट्टरवाद जो नाइट क्लबों, कॉन्सर्ट हालों और स्टेडियमों पर आत्मघाती हमला करते हैं या पागलों की तरह लोगों पर गाड़ियां चढ़ा देते हैं वे इंतिहाई जानवरों वाला और अत्याचारपूर्ण रंग में इस्लामी शिक्षाओं की ख़िलाफ़ कर रहे होते हैं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: क़ुरआन शरीफ़ ने बुनियादी इन्सानी अधिकार के तौर पर धार्मिक आज़ादी के अतिरिक्त और भी बहुत से दैनिक की ज़िन्दगी के उसूल सिखाए हैं जिनके द्वारा लोग बिना किसी नस्ल तथा अकीदों के भेद के मिलजुल कर अमन वाली ज़िन्दगी बसर कर सकते

हैं। उदाहरण के तौर पर सूर अल-बकर: की नम्बर 189 मैं क़ुरआन शरीफ़ ने इन्साफ़ पर आधारित तिजारत के बारे में वर्णन फ़रमाया है और माली सम्बन्धों या पैसों के लेन-देन में नेक नीयती की यक़ीन दहानी करवाई है। इस आयत में अल्लाह तआला ने मुसलमानों को नसीहत फ़रमाई है कि उन्हें कभी धोखा दही से माल प्राप्त नहीं करना चाहिए। बल्कि मुसलमानों को ईमानदार और भरोसा के योग्य बनने की शिक्षा दी गई है ताकि विभिन्न लोगों के मध्य शत्रुता और द्वेष न पैदा हो।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: इस्लाम यह सिखाता है कि न्याय से दूर तिजारत और मामलों को पूरा न करना समाज में एकता को कमज़ोर कर देता है और समाज के अमन को तबाह कर देता है। जहां दुनिया में व्यक्तिगत और सामूहिक सतर पर स्वार्थों और लालच के कारण इतने मतभेद और तकलीफ़ें मौजूद हैं, वहां समाज में अमन की स्थापना के लिए इन्साफ़ और बराबरी के उसूल बहुत महत्त्वपूर्ण हैं। फिर सूर अल-मुतफ़्फ़फ़ीन की आयतें 2 से 4 मैं क़ुरआन शरीफ़ फ़रमाता है।" हलाकत है तौल में नाइंसाफ़ी करने वालों के लिए। अर्थात वे लोग कि जब वे लोगों से तौल लेते हैं भरपूर (पैमानों) के साथ लेते हैं। और जब उनको माप कर या तौल कर देते हैं तो कम देते हैं।" यह आयतें इस बात की पुष्टि करती हैं कि जो लोग व्यापारिक लेन-देन में हानि करते हैं, जो दूसरों को कम देते हैं जबकि बदला में अदा योग्य से भी अधिक की मांग करते हैं और धोखा देने और झूठ से काम लेते हैं, उन पर लानत भेजी गई है और उनकी गिनती ज़लील तथा रुस्वा होने वालों में होगी।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: क़ुरआन करीम ने विश्वव्यापी क़ौमों के और अंदरूनी मतभेद या विभिन्न क़ौमों के मध्य उठने वाले मतभेदों को हल करने के बारे में भी रहनुमा नियम विस्तार के साथ वर्णन फ़रमाए हैं। इस्लाम का ध्यान हमेशा स्थायी अमन की स्थापना और शत्रुता और दुश्मनी की समाप्ति की तरफ़ रही है। उदाहरण के तौर पर सूर अल-हुजरात की नम्बर 10 मैं वर्णन फ़रमाया है कि अगर दो गिरोहों में लड़ाई हो जाए तो उनके पड़ोसियों या किसी ग़ैर जांबदार गिरोह को बातचीत के माध्यम से उनमें सन्धि करवा देनी चाहिए। तीसरे पक्ष जो सुलह करवाए अपने स्वार्थों से ऊंचा हो कर करवाए। फिर अगर सन्धि से अमन वाले फ़ैसला न हो सके या कोई अगर वह मुआहिदा के बाद उस की रक्षा न करे तो दूसरी क़ोमों इस पक्षा के ख़िलाफ़ मुत्तहिद हो जाएं जो ना इंसाफ़ी का प्रदर्शन कर रहा है और इस को ज़ोर से रोकें। फिर जब वह जुल्म करने वाला रुक जाए तो फिर उस को अपमानित नहीं करनी चाहिए और न ही इस पर अन्यायपूर्ण पाबंदियां लगानी चाहिऐं। बल्कि इन्साफ़ और स्थायी अमन को प्राप्त करने के लिए उन्हें अवसर प्रदान करना चाहिए कि वह आज़ाद समाज के तौर पर आगे बढ़ सकें और उन्हें दोबारा अपने पांव पर खड़ा होने के लिए हर प्रकार की मदद भी प्रदान करनी चाहिए।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: मेरी आस्था है कि यह ग़ैरमामूली कुरान के उसूल सिर्फ मुसलमानों के लिए नहीं बल्कि विश्वव्यापी तौर पर झगड़े को सुलझाने के लिए बुनियादी उसूल है और अगर इस पर अनुकरण किया जाए तो यह दुनिया के स्थायित्व और चिरस्थायी अमन को प्राप्त करने का माध्यम साबित हो सकता है। बड़े खेद की बात है कि बहुत से मुसलमान देश इस कुरआन के उसूल पर अनुकरण करते नज़र नहीं आते जिसके नतीजा में वे बेवकूफ़ाना झगड़े में उलझे हुए हैं और निरन्तर जुल्म तथा नाइंसाफ़ी के दायरे में जकड़े हुए नज़र आते हैं। जैसा कि ज़िक्र हो चुका है कि यह आयत इस बात को भी वर्णन करती है कि विजयी को फ़तह प्राप्त करने के बाद हारने वाले पर दबाओ नहीं डालना चाहिए और उसका अपमान नहीं करनी चाहिए। उसकी हिक्मत स्पष्ट है कि अगर हारने वाले अपमानित किया जाए तो अमन अधिक देर स्थापित नहीं रहेगा बल्कि इस क़ौम के लीडरों और लोगों में व्याकुलता और शत्रुता पैदा हो जाएँगी। और उसके विपरीत अगर हारने वाली क़ौम के साथ दया और इन्साफ़ का व्यवहार किया जाए तो आपसी सम्मान और भरोसा का माहौल पैदा होगा।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: परन्तु आजकल हम प्राय देखते हैं कि बड़ी ताक़तें अमन की स्थापना के नाम पर जुलम तथा अन्याय करते हैं जिसकी वजह से बेचैनी और शत्रुताएं पैदा होती हैं। इस का अर्थ है कि हर किस्म का अमन मुआहिदा के नाज़ुक धागे से बंधा हुआ होता है जो कि प्रत्येक समय टूटने के ख़तरा के सम्मुख रहता है। इस किस्म के अस्थायी कदमों से किसी को कोई लाभ नहीं पहुंचता इस के अतिरिक्त अग्रवादियों और कट्टरता पसन्द लोगों के जो मायूस लोगों को निशाना बनाते हैं और इस के परिणाम हम कई सालों से देख रहे हैं। पूर्व तथा पश्चिम दोनों में अमन और सफलता के नीले आसमान पर ना इंसाफ़ी और जंग के घने बादल छाए हुए हैं। दुनिया की अधिकतर क़ौमें, लड़ाई झगड़ा और इंतिक़ाम और दूसरों को नीचा दिखाने की इच्छा की वजह से फूट का शिकार हैं। बेचैनी की यह अवस्था बढ़ती चली जाएगी जब तक कि विश्वव्यापी सम्बन्धों की नींव इन्साफ़ , दयानतदारी और दूसरों के अधिकार की अदायगी पर न रखी जाए। जैसा कि मैं दुनिया को आज देखता हूँ, मेरी दुआ है कि दुनिया भूतकाल की ग़लतियों को न दोहराए, बल्कि हमें तारीख़ से सबक़ सीखना चाहिए ताकि हम अपने लिए और अपनी अगली नस्लों के लिए बेहतर भविष्य पैदा करें।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: अगर हम पहली विश्वव्यापी जंग के बाद के हालात को देखें तो लीग आफ़ नेशनज़ बनाई गई थी लेकिन यह अपने उद्देश्य को प्राप्त करने में बुरी तरह असफल हुई। इस की असफलता की कारण यह थी कि इन्साफ़ और ग़ैर जांबदारी को जारी न किया गया था। बल्कि दोस्तियाँ और गिरोह बन गए थे और कुछ लोगों से अनुचित सुलूक किया गया और उनको अपने सम्मान से वंचित रखा गया। जिसके नतीजा में शीघ्र ही इन्सानी तारीख़ की सबसे हलाकत करने वाली जंग अर्थात द्वितीय विश्व युद्ध शुरू हो गया। अन्त में छ: साल की तबाही और फ़रेब-कारी के बाद यह जंग अपने समापन को पहुंची , तो दुनिया में अमन की स्थापना के लिए यू एन ए बनाई गई। लेकिन यू एन ए भी अपने ऊंचा उद्देश्यों और वर्णन किए गए लक्ष्यों के बावजूद अपने मिशन में असफल हो चुकी है। आज दोबारा गिरोहबंदी हो रही है, समाज मतभेद का शिकार हो रहा है। और क़ौमों के मध्य फूट दिन प्रतिदिन गहरे होते जा रहे हैं। बहुत से मुसलमान और ग़ैरमुस्लिम देश अमन की सही रंग में समझ नहीं रखते और सम्मुख आने वाले ख़तरों से अज्ञान हैं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: अवश्य अब होने वाली जंग के परिणाम इन जंगों से कहीं अधिक भयानक और तबाह करने वाले हैं जो कि हम पहले देख चुके हैं। क्योंकि कई देशों ने ऐटमी हथियार बना लिए हैं। अगर उनमें से एक देश ने भी यह हलाक करने वाले हथियार प्रयोग कर लिए तो वह न सिर्फ इस दुनिया को जो हम देख रहे हैं तबाह कर देंगे बल्कि अगली नस्लों के लिए भी भयानक और तबाह करने वाले परिणाम पीछे छोड़कर जाऐंगे। अगर ऐटमी जंग शुरू होती है तो एक नस्ल के बाद दूसरी नस्ल के बच्चे ज़हनी और जिस्मानी तौर पर अपाहिज पैदा होंगे। अत: इस तरह वह अपनी क़ौम की सेवा करने की बजाय बहुत अधिक तकलीफ़ देने वाली ज़िन्दगी गुज़ार रहे होंगे और समाज पर बोझ बन रहे होंगे। उनके घर मायूसी से भरे हुए होंगे, उनके क़स्बे दुखी और उनकी क़ौम बदहाली का शिकार होगी। हमारी बेवक़ूफ़ियों और स्वार्थों के कारण से होने वाली जंगों की वजह से अगर वह हम को बुरा भला कहें तो वे ऐसा करने में ठीक होंगे क्योंकि इन जंगों ने उनकी जन्म से पहले ही उनके ख़्वाब चकनाचूर कर दिए होंगे। अत: किसी को भी इस ख्याल में नहीं रहना चाहिए कि हम जिस बोहरान से गुज़र रहे हैं वह एक मामूली चीज़ है या यह बोहरान हमारे रवैय्ये तबदील किए बिना ख़ुद ही टल जाएगा।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया इस के अतिरिक्त, अगर दुनिया में अमन और तहफ़्फ़ुज़ की कमी का आरोप इस्लाम पर डाला जाता रहा तो दुनिया की यह अस्थायी अवस्था और अधिक बिगाड़ का शिकार होती रहेगी। किसी धर्म या उस के अनुयायियों पर हमला करने से इस अन्तर में और अधिक वृद्धि ही होगी। इस से सिर्फ उग्रवादियों का हौसला बढ़ेगा जिससे समस्त जमाअतों और अक़ीदों के मध्य नफ़रत की आग भड़काने की कोशिशों में और अधिक वृद्धि होती चली जाएगी।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया जैसा कि मैंने साफ़ तौर पर वर्णन कर दिया है कि अगर मुसलमान देशों या दहश्तगर्द गिरोह इस्लाम के नाम पर अत्याचार करते हैं तो यह इस कारण से है कि वह अपनी शिक्षाओं से दूर हो चुके हैं और सिर्फ व्यक्तिगत लाभों को प्राप्त करना चाहते हैं। आजकल के झगड़े और जंगों का धर्म से कुछ लेना देना नहीं बल्कि यह केवल दौलत, ताक़त और भौगोलिक फ़तह के उद्देश्य से हैं

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया इन बातों के सम्मुख मैं अपने दिल की गहराईयों से दुआ करता हूँ कि अल्लाह करे कि दुनिया वाले साझे लाभों की लिए इकट्ठे हों और इत्तिहाद के साथ काम करें और आपसी भरोसा और भाईचारा को बढ़ावा करें। आईए हम सब धर्म पर आरोप लगाने या

एक दूसरे पर उंगलियां उठाने की बजाय मिलकर अपनी समस्त ताक़त अमन की स्थापना के लिए व्यतीत करें और अपनी अगली नस्लों के लिए सुरक्षित भविष्य छोड़कर जाएं। हमारी अगली नस्लें हमें नफ़रत और नाराज़गी के साथ नहीं बल्कि मुहब्बत और प्यार के साथ याद करें। अल्लाह करे कि समस्त लोगों और समस्त क़ौमें एक दूसरे के अधिकार पूरे करने वाली हूँ। और अल्लाह करे कि सहानुभूति और इन्साफ़ हर किस्म की ना इंसाफ़ी और झगड़े पर जीत जाए।

इन शब्दों के साथ मैं अब एक बार फिर आप सब का शुक्रिया अदा करता हूँ कि आप सब यहां आए। बहुत शुक्रिया।

ख़िताब के आख़िर में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने दुआ करवाई। जिसमें समस्त मेहमान अपने अपने तरीक़ा के अनुसार शामिल हुए। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ का यह ख़िताब 7 बजकर 23 मिनट तक जारी रहा।

रिसाला रिव्यू रेलीजिंज़ के फ्रैंच ऐडीशन की वेबसाइट का उद्घाटन

इस के बाद प्रोग्राम के अनुसार हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने रिसाला रिव्यू आफ़ रेलीजिंज़ के फ्रैंच ऐडीशन की वेबसाइट का उद्घाटन फ़रमाया। अब इस रिसाला के प्रिंट ऐडीशन के साथ-साथ इस का इंटरनैट ऐडीशन भी उपलब्ध होगा। इस तरह इंशा अल्लाह इस रिसाला के द्वारा फ्रैंच भाषा बोलने वाले करोड़ों लोगों तक इस्लाम का वास्तविक पैग़ाम पहुँचेगा।

रिसाला रिव्यू आफ़ रेलीजिंज़ वह बरकतों वाले रिसाला है जो हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने 1902 ई में पश्चिमी दुनिया को इस्लाम की ख़ूबसूरत और वास्तविक शिक्षा से परिचित करवाने के लिए आरम्भ फ़रमाया। हुज़ूर अलैहिस्सलाम के मुबारक युग में ही इस रिसाला की शौहरत इस क़दर हुई कि पश्चिमी अख़बारों, रसालों और इल्मी वर्ग ने इस के विभिन्न हवाले दिए हैं।

इस वक़्त तक रिसाला रिव्यू आफ़ रेलीजिंज़ चार भाषाओं अंग्रेज़ी (मासिक जर्मन (त्रैमासिक), फ्रैंच (त्रैमासिक) और स्पेनिश (त्रैमासिक) प्रकाशित हो रहा है। फ्रैंच ऐडीशन पिछले दो सालों से प्रिंट ऐडीशन में उपलब्ध था। लेकिन अब इंटरनैट के द्वारा एक बहुत बड़ी संख्या को इस्लाम की वास्तविक शिक्षाओं से आगाह करने का कारण होगा। इंशा अल्लाह ।

इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ मार्की से बाहर तशरीफ़ लाए और हियूमैनिटी फ़र्स्ट फ्रांस के दफ़्तर में तशरीफ़ ले गए। इस विभाग ने भी जलसा के अवसर पर अपना एक दफ़्तर स्थापित किया था। जिस में इस विभाग के द्वारा होने वाले कामों को बड़ा कर के तस्वीरी और तहरीरी भाषा में दिखाया गया था। हुज़ूर अनवर ने निरीक्षण फ़रमाया और कुछ मामले के बारे में पूछा

आज की इस आयोजन में Francophone देशों से सम्बन्ध रखने वाले 75 मेहमान शामिल हुए। इस के अतिरिक्त इन देशों से सम्बन्ध रखने वाले मुबाईन अहमदी दोस्त भी बड़ी संख्या में मौजूद थे।

एक अलग मार्की में इन मेहमानों के लिए शाम के खाने का प्रबन्ध किया गया था। प्रोग्राम के अनुसार हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ इस मार्की में तशरीफ़ लाए जहां उन मेहमानों ने हुज़ूर अनवर के साथ खाना खाया।

लोग दुनिया में इस्लाम के ख़िलाफ़ बहुत प्रापेगंडा करते हैं, आपके ख़लीफ़ा ने आज इन सब का ज़बरदस्त दिया है

मुसलमानों की हालत ऐसी है कि उनको तो अपने अक़ीदा और ईमान के बारे में इल्म नहीं, उनको आपके ख़लीफ़ा से सीखना चाहिए। (एक ग़ैर अहमदी मुसलमान मुर्तज़ा साहिब)

मुझे आज ख़लीफतुल मसीह के ख़िताब से इस बात का अंदाज़ा हुआ है कि आप लोग ही वास्तविक और सच्चे मुसलमान हैं और जो लोग कहते हैं कि आप मुसलमान नहीं हैं, वे बिलकुल ग़लत कहते हैं

लोग फ्रांस में इस्लाम से ,मुसलमानों से डरते हैं, हमें पता नहीं था कि हम किस तरह उस का प्रतिरक्षा करें। आज ख़लीफतुल मसीह ने बहुत उत्तम तरीक़ा से इस्लाम का प्रतिरक्षा की है।

(मराक़श से सम्बन्ध रखने वाले एक ग़ैर अहमदी मेहमान सुफ़ियान साहिब)

सय्यदना हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ का ख़िताब सुनने के बाद मेहमानों के ईमान वर्धक विचार

यह बात यक़ीनी है कि अब ग़लबा इस्लाम मसीह मौऊद के द्वारा से ही होना है

अजीब अजीब तरीक़ों से अल्लाह तआला लोगों की रहनुमाई फ़र्मा रहा है , और लोग हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की जमाअत में शामिल हो रहे हैं

लेकिन अगर हम जो पुराने अहमदी हैं इन बरकतों का हिस्सा बनना चाहते हैं जो इस से जुड़े हैं तो हमें भी इस पैग़ाम के पहुंचाने में अपनी भरपूर भूमिका अदा करनी होगी, जो नए आने वाले हैं इन बरकतों से फ़ैज़ पाने के लिए इस पैग़ाम को जो उनकी इस्लाह का कारण बना , दूसरों तक पहुंचाना चाहिए और तब्लीग़ के मैदान में पहले से बढ़कर कोशिश करनी चाहिए ,अल्लाह तआला सबको इस की तौफ़ीक़ प्रदान फरमाए।

जलसा सालाना फ्रांस से सय्यदना हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ का समापन ख़िताब

खाना खाने के बाद मेहमानों ने बारी-बारी हुज़ूर अनवर से मुलाक़ात का सौभाग्य पाया। मेहमान बारी बारी हुज़ूर अनवर के पास तशरीफ़ लाते। हुज़ूर अनवर दया करते हुए मेहमानों से गुफ़्तगु फ़रमाते। मेहमान हुज़ूर अनवर के साथ तस्वीर बनवाने का सौभाग्य पाते।

इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ कुछ देर के लिए अपनी रिहायश गाह पर तशरीफ़ ले गए 8 बजकर 50 मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला ने मर्दाना जलसा गाह में तशरीफ़ ला कर नमाज़ मग़रिब व इशा जमा कर के पढ़ाईं। नमाज़ों की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ अपनी रिहायश गाह पर तशरीफ़ ले गए।

5 अक्तूबर 2019 (दिनांक हफ़्ता)

मेहमानों के विचार

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ के आज के ख़िताब ने ग़ैर मुस्लिम और ग़ैर जमाअत मेहमानों पर गहरा प्रभाव छोड़ा और कुछ मेहमान अपनी भावनाओं का इज़हार किए बिना न रह सके।

इस क्षेत्र के मेयर ने अपने विचारों का इज़हार करते हुए कहा कि जब मैं बुध के दिन ख़लीफतुल मसीह के स्वागत के लिए यहां आया था तो जिस बात ने सबसे अधिक मुझे प्रभावित क्या वो यह थी कि ख़लीफतुल मसीह बहुत ही सुकून अपने अंदर रखते हैं। आज दुनिया भागदौड़ में लगी हुई है। क्या राजनीतिक लीडर और क्या धार्मिक लीडर्ज़ सब बेचैनी में पड़े हैं। लेकिन ख़लीफतुल मसीह बावजूद इस के कि लम्बा सफ़र कर के आए थे। बहुत सुकून वाले थे और बहुत मुस्कुराते हुए मिले।

एक मेहमान औरत Alfonsina Bellio साहिबा जो पेशा के एतबार से Anthropologist हैं, ने अपने विचारों का प्रकटन करते हुए कहा कि मैं ख़लीफतुल मसीह के ख़िताब से बहुत प्रभावित हुई हूँ। जब ख़लीफ़ा ने यह बात की कि वह फ्रांस में जो विभिन्न हमले हुए हैं उनकी निन्दा करते हैं। उन्होंने स्पष्ट कर दिया कि इस्लाम का ऐसे हमलों से कोई सम्बन्ध नहीं है। ख़लीफतुल मसीह अमन पसंद और खुले ज़हन के मालिक हैं और भाईचारा को बढ़ावा देते हैं।

आपने इस्लाम की जो वास्तविक तस्वीर प्रस्तुत की है इस से मालूम होता है कि मुसलमान आसानी से पश्चिमी में Integrate हो सकते हैं। जो कहते हैं कि

पश्चिमी दुनिया में इस्लाम के लिए कोई स्थान नहीं है, मुसलमान आपस में मिलकर नहीं रह सकते वे ग़लत कहते हैं। ऐसे लोगों को आज की तक़रीर सुननी चाहिए।

एक ग़ैर अहमदी मुसलमान मुर्तज़ा साहिब जिनका सम्बन्ध ईरान से है अपने विचारों का इज़हार करते हुए कहते हैं कि उन्हें आज अहमदिया कम्यूनिटी और ख़लीफतुल मसीह के स्टेटस का पहली बार इल्म हुआ है। लोग दुनिया में इस्लाम के ख़िलाफ़ बहुत प्रोपेगंडा करते हैं। आपके ख़लीफ़ा ने आज इन सब का ज़बरदस्त जवाब दिया है। मुसलमानों की हालत ऐसी है कि उनको तो अपने अक़ीदा और ईमान के बारे में इल्म नहीं। उनको आपके ख़लीफ़ा से इस्लाम सीखना चाहिए। ख़लीफ़ा ने आज स्पष्ट कर दिया है कि जिहाद असल में किया है और आज किस तरह उस की ग़लत व्याख्याएं की जा रही हैं। ख़लीफ़ा ने इस्लाम के आरम्भिक दौर के और आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की जो घटनाएं प्रस्तुत की हैं उनसे साबित होता है कि इस्लाम एक अमन पसंद धर्म है। मैंने अपनी ज़िन्दगी में पहली बार इतना पर हिक्मत वाला ख़िताब सुना है

मराक़श से सम्बन्ध रखने वाले एक ग़ैर अहमदी मेहमान सुफ़ियान साहिब वर्णन करते हैं। मुझे आज ख़लीफतुल मसीह के ख़िताब से इस बात का अंदाज़ा हुआ है कि आप लोग ही वास्तविक और असल मुसलमान हैं और जो लोग कहते हैं कि आप मुसलमान नहीं हैं। वे बिलकुल ग़लत कहते हैं। मौलवियों ने जो मुझे बचपन से अहमदियों के बारे में सिखाया था वे सब झूठ था। लोग फ्रांस में इस्लाम से, मुसलमानों से डरते हैं। हमें पता नहीं था कि हम किस तरह उस का दिफ़ा करें। आज ख़लीफतुल मसीह ने बहुत उत्तम तरीक़ से दिफ़ा किया है

एक ईसाई मेहमान Jacob साहिब ने अपने विचारों का इज़हार करते हुए कहा: ऐसे प्रोग्रामों की दुनिया में बहुत ज़रूरत है। आपके ख़लीफ़ा विभिन्न जातियों और धर्मों में जो आपस की दूरी हैं, उनको गिरा रहे हैं। उन्होंने हमें यह समझाया है कि जो दहशतगर्द हैं उनके राजनीतिक उद्देश्य होते हैं। धर्म एक अच्छी चीज़ है। धर्म से डरना नहीं चाहिए। ख़लीफ़ा ने बार-बार आज़ादी की बात की है। यह फ्रांस के लोगों के लिए एक नई बात है। फ्रांस के लोगों में इस्लाम के बारे में बिलकुल दूसरी सोच है।

एक मेहमान Maxine Onfray साहिब जो थिंक टैंक में काम करते हैं कहने लगे कि आज मेरी ज़िन्दगी का बहुत प्यारा दिन है जिसमें मैं ने ख़लीफतुल मसीह को सीधा सुना है और देखा है। आपके ख़लीफ़ा ने बिलकुल सही कहा है कि इस वक़्त हम एक ऐसे अंधेरे दौर से गुज़र रहे हैं जिस में नफ़रत पाई जाती है। लेकिन साथ हमें यह भी समझा दिया कि यह सब कुछ धर्म की वजह से नहीं है और लोगों को इस्लाम से डरने की ज़रूरत नहीं है। ख़लीफ़ा ने जो यह कहा है कि धर्म को शिद्दत-पसंद ने Hi jack कर लिया है और उसे अपने राजनीतिक उद्देश्यों के लिए प्रयोग कर रहे हैं। बिलकुल ठीक कहा है। मैं इस से सहमत हूँ

जब मेहमान हुज़ूर अनवर के साथ खाना खाने के बाद तस्वीरें बनवा रहे थे तो उस वक़्त एक औरत जिनका सम्बन्ध कोरिया से था उसने भी तस्वीर की दरख़ास्त की। इस से पहले कि वह कुछ निवेदन करती। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया आपका सम्बन्ध कोरिया से है। यह शब्द सुनते ही वह औरत हैरत से उछल पड़ी कि हुज़ूर को कैसे इल्म हुआ कि मेरा सम्बन्ध कोरिया से है। अत: उसने अपने रिवायती अंदाज़ में हाथ जोड़ते हुए और झुकते हुए बताया कि इस का सम्बन्ध कोरिया से है। इस के बाद उसने तस्वीर बनवाने का सौभाग्य भी पाया।

6 अक्तूबर 2019 ई(दिनांक इतवार)

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने सुबह 6 बजकर 45 मिनट पर तशरीफ़ ला कर नमाज़ फ़ज्र पढ़ाई। नमाज़ की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ अपनी रिहायश गाह पर तशरीफ़ ले गए। सुबह हुज़ूर अनवर की दफ़्तरी मामलों को पूरा करने में व्यस्तता रही।

आज जमाअत अहमदिया फ्रांस के जलसा सालाना का तीसरा और आख़िरी रोज़ था। प्रोग्राम के अनुसार सवा तीन बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ मर्दाना जलसा गाह में तशरीफ़ लाए और बैअत का आयोजन हुआ। बैअत का आयोजन MTA इंटरनैशनल के द्वारा दुनिया-भर के देशों में सीधा प्रसारित हुआ और दुनिया के विभिन्न देशों की जमाअतों ने सेटेलाइट सम्पर्क के द्वारा अपने प्यारे आक़ा की बैअत का सौभाग्य पाया।

आज हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ के मुबारक हाथ पर अल-जज़ाइर, मराक़श ,बोरकीना फासो, मारीशस, तीयूनस, फ्रांस, कैमरोन, जज़ाइर कमोरोज़ ,तुर्की और केलेडोनिया से सम्बन्ध रखने वाले 11 लोगों ने बैअत का सौभाग्य पाया। आख़िर पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने दुआ करवाई।

इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने नमाज़ ज़ुहर व अस्र जमा कर के पढ़ाईं। नमाज़ों की अदायगी के बाद जैसे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ जलसा की कार्रवाई के लिए तशरीफ़ लाए तो सारा जलसा गाह आसमान तक पहुंचने वाले नारों से गूंज उठा। दोस्तों ने बड़े जोश के साथ नारे बुलन्द किए

जलसा सालाना फ्रांस का समापन आयोजन

3 बजकर 40 मिनट पर समापन आयोजन का आरम्भ तिलावत क़ुरआन करीम से हुआ जो आदरणीय हाफ़िज़ सलीम तोरे साहिब ने की और इस का उर्दू अनुवाद आदरणीय मन्सूर अहमद मुबश्शिर साहिब मुबल्लिग़ सिलसिला स्टरासबर्ग फ्रांस ने प्रस्तुत किया

इस के बाद हज़रत अक़्दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का अरबी क़सीदा بِكَ الْحَوْلُ يَا قَيُّوْمُ يَا مَنْبَعَ الْهُدٰى के चुने हुए अशआर आदरणीय हमज़ा बला रबी साहिब ने अच्छी आवाज़ से प्रस्तुत किए। इसके बाद उसामा अहमद साहिब मुबल्लिग़ फ्रांस ने इस क़सीदा का उर्दू अनुवाद प्रस्तुत किया। इस के बाद आदरणीय मतलूब अहमद साहिब ने हज़रत अक़्दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का कलाम

वह देखता है ग़ैरों से क्यों दिल लगाते हो
जो कुछ बुतों में पाते हो इस में वह क्या नहीं

प्रस्तुत किया

शैक्षिक सनदों का तक़सीम करना

इस के बाद प्रोग्राम के अनुसार हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने शैक्षिक मैदान में नुमायां कामयाबी प्राप्त करने वाले 36 छात्र को अस्नाद प्रदान फरमाईं। शैक्षिक सनदें प्राप्त करने वाले इन ख़ुशनसीब छात्रों के नाम निम्नलिखित हैं

नोअमान रशीद, ए लेवल हियूमन रिसोर्सज़ ऐंड कम्यूनीकेशन
अब्सार अहमद, ए लेवल टैक्नोलोजी,इन्फ़ार्मेशन ऐंड डीजीटल सिस्टम
Aimene Akkouche ए लेवल साईंस
शफ़ीक़ मुहम्मद बी ए टैक्नोलोजी
मतलूब अहमद बी ए इलैक्ट्रीकल इंजीनीयरिंग
नसीर अहमद राजपूत बी अकाओंटनसी एंडमेंजमंटट
मुहम्मद फ़हीम अफ़ज़ल बी ए साईंस ऐंड टैक्नोलोजी
मलिक नोअमान मुज़फ़्फ़र बी ए टैक्नोलोजी
असदुल्लाह बी ए साईंस इलैक्ट्रीकल इंजीनीयरिंग
ज़ीशान रशीद Bachelor in Nursing
तौसीफ़ अफ़ज़ल BTECहाइर नैशनल डिप्लोमा ऐंड मेंजमंटट
फ़र्ज़ान अहमद गरैजूएट कैमीकल कंट्रोल परइसज़
सुलेमान तारिक़ BTECहाइर नैशनल डिप्लोमा इलैक्ट्रॉनिक
Samir Bounpeng मास्टर इंटरनैशनल ऐंड ऑपरेट फिनांस
मुहम्मद अनवर अहमद मास्टर्ज़ इन हिस्ट्रीHistory)
सईद अहमद राजपूत मास्टर फिनांस
हस्सान अहमद मास्टर टैक्नोलोजी
अहमद Chettih मास्टर साईंस ,टैक्नोलोजी ऐंड हैल्थ
फ़हद महमूद बट (मास्टर प्रोफ़ैशनल इन मैनिजमंट, क्वालिटी (client relationship management)
वजाहत चौधरी मास्टर इन मार्केटिंग ऐंड कमर्शीयल डिवैलपमैंट

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

"अपनी इबादतों को भी विशेष करें और दुनिया को भी इस्लाम की वास्तविक शिक्षा से अवगत कराएं।"

(ख़ुत्बा जुम्अः 17 मई 2019)

तालिबे दुआ

KHALEEL AHMAD

S/O LATE HAJI BASHEER AHMAD SB AND FAMILY,
JAMAAT AHMADIYYA BIJUPURA, SAHARANPUR (U.P)

तिमसाल मलिक मास्टर मैनिजमंट इन्फ़ार्मेशन सिस्टमम
हादी जमाल अहमद मास्टर मैनिजमंट
मुहम्मद उम्मान Pere ख़ालिद महमूद मास्टर पब्लिक ऐडमिनिस्ट्रेशन
इबराहीम Chettih मास्टरIntellectual PropertyLaw
Khan Ahmer ए लेवल ब्यालोजी
ग़ुलाम एजाज़ यासर मास्टर Embedded system Engineering
मुहम्मद काहलों Advocate in the bar of Strasbourg
Baijan Nourou Dine मासड़ साइबर स्कियोरटी
आदिल अहमद BTEC हायरनेशनल डिप्लोमा अकाओंटनसी ऐंड ऑपरेट मेंजमंट
शकील अहमद डिप्लोमा आफ़ ऐंड अकाओंटनसी
Dapa Sacko पी एचडीMRI
नदीम अहमद ख़ान मास्टर बिज़नस ऐडमिनिस्ट्रेशन
सय्यद हुसैन अली मास्टर्ज़
Louis le Chevallier मास्टर्ज़ एडमिनिस्ट्रेटव अफेयर्ज़
रहमान बशीर मास्टर हियूमन ऐंड सोशल साईंस
अताउल अलीम

शैक्षिक ऐवार्ड के आयोजन के बाद 4 बजकर 12 मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने समापन ख़िताब फ़रमाया

समापन ख़िताब हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला

तशह्हुद व तऊज़ और सूरत फ़ातिहा की तिलावत के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने सूरत की आयत 22 की तिलावत की तथा अनुवाद वर्णन फ़रमाया। इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया।

अल्लाह अवश्य ताक़तवर और ग़ालिब है। अल्लाह तआला जब अंबिया को प्रादुर्भव फ़रमाता है तो फ़ौरी तौर पर ही साथ ही उन्हें सफलताएं मिलनी शुरू नहीं हो जाती बल्कि विरोधियों की तरफ़ से विरोध की आंधियां चलती हैं। यूं लगता है कि बस अब ख़त्म हुआ कि अब। समस्त अंबिया की तारीख़ हमें यही बताती है कि विरोधी अपने इंतिहा तक ज़ोर लगा लेते हैं लेकिन अल्लाह तआला की तक़दीर फिर उन्हें ही ख़त्म करती है और अंबिया कामयाब होते हैं। क़ुरआन करीम की यह आयत जो मैंने तिलावत की है इस में अल्लाह तआला ने यही बताया है कि अल्लाह तआला का यह फ़ैसला है कि वह और इस का रसूल ही ग़ालिब आएँगे और दुश्मन असफल व पराजित होंगे। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और आप के सहाबा को भी बदतरीन विरोध में से गुज़रना पड़ा और विरोधियों का विचार था कि इन कुछ असहाय और ग़रीब लोगों को हम बड़ी आसानी से अपने पांव तले कुचल देंगे , उनको ख़त्म कर देंगे। लेकिन हुआ क्या? वह लोग ख़ुद ही असफल हो गए।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया और फिर इस ज़माना में आप के सच्चे ग़ुलाम ने जब मसीह और महदी होने का दावा किया और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की पेशगोइयों के ठीक अनुसार अल्लाह तआला ने आपको भेजा। आपका कोई अपना बनाया हुआ दावा नहीं था। तो फिर अल्लाह तआला ने आप अलैहिस्सलाम को भी जहां बहुत सी ख़ुशख़बरियों से नवाज़ा, जमाअत की तरक़्क़ी की ख़बर दी , आपकी मदद और समर्थन की ख़बर दी, पूर्णता इशाअत हिदायत के वादा के पूरा होने की ख़बर दी , आप अलैहिस्सलाम को फ़तह और विजय की ख़बर दी वहां विरोधियों की असफलताओं की भी ख़बर दी। अत: आपको كَتَبَ اللّٰهُ لَاَغْلِبَنَّ اَنَا وَرُسُلِيْ का इलहाम 1883 ई से लेकर1906 ई तक विभिन्न समयों में कई बार हुआ। अल्लाह तआला ने तसल्ली दी कि इस विरोध के बावजूद , विरोधियों के समस्त चेष्टाओं के बावजूद , हुकूमतों के आपके ख़िलाफ़ होने के बावजूद, हर धर्म और मुसलमानों के समस्त फ़िर्क़ों के आपके ख़िलाफ़ समस्त कोशिशों के बावजूद अल्लाह तआला आपको सफलताएं प्रदान फरमाएगा और आपकी जमाअत तरक़्क़ी करती चली जाएगी

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया एक अवसर पर , एक मज्लिस में आप अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि याद रखो ख़ुदा के बंदों का अंजाम कभी बद नहीं हुआ करता। उस का वादा كَتَبَ اللّٰهُ لَاَغْلِبَنَّ اَنَا وَرُسُلِيْ बिलकुल सच्चा है और यह उसी वक़्त पूरा होता है जब लोग उस के रसूलों का विरोध करें

फिर एक स्थान आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं यह ख़ुदा तआला की सुन्नत है और जब से कि उसने इन्सान को ज़मीन में पैदा किया हमेशा इस सुन्नत को प्रकट करता रहता है कि वह अपने नबियों और रसूलों की मदद करता है और उनको ग़लबा देता है जैसा कि वह फ़रमाता है كَتَبَ اللّٰهُ لَاَغْلِبَنَّ اَنَا وَرُسُلِيْ और ग़लबा से अभिप्राय यह है जैसा कि रसूलों और नबियों की इच्छा होती है कि ख़ुदा की हुज्जत ज़मीन पर पूरी हो जाएगी और इस का मुक़ाबला कोई न कर सके इसी तरह ख़ुदा तआला मज़बूत निशानों के साथ उनकी सच्चाई प्रकट कर देता है और जिस सच्चाई को वह दुनिया में फैलाना चाहते हैं इस का बीजरोपण उनके हाथ से कर देता है। उनके हाथ से इस का बीज बोया जाता है , यही ग़लबा होता है। इस से मुराद यह है कि अल्लाह तआला का पैग़ाम एक बार जारी हो जाता है और अल्लाह तआला की हिमायत की हवाएं चलनी शुरू हो जाती हैं अल्लाह तआला के समर्थन और सहायता की हवाएं चलनी शुरू हो जाती हैं। यह रिसाला अलवसियत में आप अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया और फिर वज़ाहत भी फ़रमाई कि बाज रोपण तो उनके हाथ से कर देता है , जो अपने अन्बिया भेजता है , लेकिन पूर्णता उनके हाथ से नहीं करता बल्कि उनकी वफ़ात के बाद जब विरोधियों हंसी ठट्ठा कर चुकते हैं तो फिर दूसरी क़ुदरत का हाथ दिखा कर उन उद्देश्यों की पूर्णता करता चला जाता है। आपने फ़रमाया है कि दूसरी क़ुदरत ख़िलाफ़त है। अत: हम देखते हैं कि आपके बाद अल्लाह तआला किस तरह ख़िलाफ़त के द्वारा आपकी जमाअत की तरक़्क़ी और विस्तार के सामान पैदा फ़रमाता चला जा रहा है और ख़ुद लोगों के दिलों में डाल कर आपकी जमाअत में शामिल होने की तहरीक फ़रमाता चला जा रहा है और आज एक छोटे से गांव से जो किया हुआ दावा था वह दुनिया के कोने कोने में गूंज रहा है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया अत: जमाअत अहमदिया की तारीख़ गवाह है कि जैसा कि आपने फ़रमाया कि अल्लाह तआला का वादा है कि इस के बंदे दिन प्रतिदिन तरक़्क़ी पाते हैं। जो उस के भेजे हुए नबी हैं उनकी तरक़्क़ी के क़दम रोज़ रोज़ आगे बढ़ते हैं। उनकी जमाअतें आगे बढ़ती चली जाती हैं। इस के नज़ारे को हम हर-रोज़ देखते हैं। इस की कुछ घटनाएं इस वक़्त मैं आपके सामने रखूँगा कि किस तरह अल्लाह तआला ग़ैरमामूली तरीक़ा पर यह तरक्कियां देता चला जाता है। अल्लाह तआला किस तरह आप अलैहिस्सलाम के मिशन की पूर्णता के यह काम कर रहा है।

कैमरोन से हमारे मुअल्लिम अबूबकर साहिब कहते हैं कि शहर Banyo(बानेव) से एक शख़्स अहमदो साहिब ने मुझे फ़ोन किया कि मुझे जमाअत अहमदिया के बारे में बिल्कुल इल्म नहीं था लेकिन कुछ दिन पहले मेरे बेटे को एक पमफ़ेलट मिला जिसका टाइटल था जाअल-मसीह। में इसी पमफ़लट के हवाले से आप से सम्पर्क कर रहा हूँ। उन्होंने बताया कि मैं नमाज़ों में बहुत सुस्त था एक दिन ख़वाब में एक शख़्स जिनकी सफ़ैद दाढ़ी है तशरीफ़ लाए और फ़रमाया कि उठो और नमाज़ पढ़ो। फिर मुझे नसीहत की कि नमाज़ बाक़ायदगी से पढ़ा करो। अत: इस

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह ख़ामिस

ख़िलाफत का निज़ाम भी अल्लाह तआला और उस के रसूल के आदेशों और निज़ाम का हिस्सा है।

(ख़ुत्बा जुम्अ: 24 मई 2019 ई)

तालिबे दुआ

मुहम्मद शुएब सुलेजा पुत्र जनाब मुहम्मद ज़ाहिद सुलेजा मरहूम तथा फैमली, अहमदिया जमाअत कानपुर(उत्तर प्रदेश)

हदीस नबवी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम

खड़े होकर नमाज़ पढ़ो और अगर खड़े होकर संभव न होतो बैठ कर और अगर बैठ कर भी संभव न हो तो पहलु के बल लेट कर ही सही।

तालिबे दुआ

Sohail Ahmad Nasir and Family

Jamaat Ahmadiyya Adra,Dist: Puruliya. West Bengal

ख़वाब के बाद से मैं नमाज़ों में बाक़ायदगी से कोशिश कर रहा हूँ कि एक दिन केबल चैनल पर चैनल तलाश कर रहा था कि मेरी नज़र एम. टी ए अफ्रीक़ा चैनल पर पड़ी। और देखा कि वही सफ़ेद दाढ़ी वाले कोई लैक्चर दे रहे हैं। इस तरह मुझे एम टी ए और जमाअत के बारे में कुछ मालूमात तो मिलीं लेकिन यह पता न चला कि केमरोन में जमाअत है या नहीं। अब पमफ़ेलट के द्वारा सम्पर्क हुआ है। अत: मुअल्लिम साहिब ने उन्हें तब्लीग़ की। उन्हें मेरा परिचय किराया कि यह हमारे ख़लीफ़ा वक़्त हैं और इस पर कहने लगे जो मुझे ख़वाब में नमाज़ की बाक़ायदगी की नसीहत कर रहा है वह झूठा नहीं हो सकता। यक़ीनन वह ख़ुदा तआला की तरफ़ से है और इस काम के लिए मामूर है। उसने ख़िलाफ़त की तरफ़ इशारा किया। मुअल्लिम साहिब ने उन्हें बताया कि आपके शहर बानेव में हमारी जमाअत है और वहां एक हमारे दोस्त आ दम्मू साहिब हैं वह हमारे सदर जमाअत हैं आप उनसे सम्पर्क करें। इस पर महोदय ने सदर जमाअत से सम्पर्क किया और बैअत कर के जमाअत में शामिल होने धारण कर ली। अब ख़ुदा तआला के फ़ज़ल से बाक़ायदगी से महोदय नमाज़ें पढ़ने वाले भी हैं,एम टी ए भी देखते हैं। अपने इल्म और ईमान में वृद्धि भी कर रहे हैं।

फिर अमीर साहिब तन्ज़ानिया एक घटना लिखते हैं कि लंडी शहर जहां 1948 ई में विरोधियों की तरफ़ से मुबल्लिग़ मौलाना फ़ज़्ल इलाही बशीर साहिब के साथ बहुत बुरा सुलूक किया गया था और उनको वहां से निकाला गया था। अब इसी शहर के दोनों स्थानीय रेडियो मैं साप्ताहिक जमाअत के प्रोग्राम प्रसारित होते हैं। उस के साथ-साथ अहमदिया रेडियो की 24 घंटे के प्रसारण भी सुने जाते हैं। इन प्रोग्रामों के कारण से लंडी शहर की बड़ी मस्जिद के इमाम के बेटे ने बैअत का सौभाग्य पाया। महोदय कई मदरसों से शिक्षा पाए हुए और बहुत अच्छी आवाज़ में तिलावत करते हैं। उनका जमाअत से बहुत अच्छा सम्बन्ध है। उनके अतिरिक्त एक दूसरी मस्जिद के इमाम भी हाल ही में अहमदी हुए हैं। वह कहते हैं इन दोनों प्रभाव वाली शख़्सियात की वजह से और अधिक 50 बैअतें हमें मिली हैं। लंडी शहर का अब यह हाल है कि अगर कोई यह कहे कि अहमदी काफ़िर हैं तो क्षेत्र वाले स्वंय ही उस का जवाब देने के लिए तैय्यार हो जाते हैं। चाहे वह अहमदी हुए या नहीं हुए। एक जामिया मस्जिद में मौलवी साहिब ने कहा कि अहमदियों से छेड़-छाड़ न किया करो। उनका इल्म हम से बहुत अधिक है। हमारे बड़े बड़े उलमा वे बातें नहीं जानते जो उनके साधारण मौलवी जानते हैं।

फिर नाईजीरिया की एक घटना है (ई जे बू सर्किट) की ओमव में एक दाई इलल्लाह मुबारक साहिब ने मेरा ख़ुत्बा जुम्अ: लाईव दिखाना शुरू किया और मेरे ख़ुत्बा के बाद अपना ख़ुत्बा संक्षिप्त देने लग गए तो एक ग़ैर अहमदी दोस्त जामऊ साहिब जो जुम्अ: पढ़ने हमारी मस्जिद आते थे उन्होंने एतराज़ शुरू कर दिए कि यह बिद्दत है। इस्लामी तरीक़ा नहीं है। हम तो जुम्अ: पढ़ने आते हैं। अब जमाअत अहमदिया टीवी के द्वारा जुम्अ: पढ़ने लगी है। इस तरह के एतराज़ करने लग गए इस पर उनको समझाया गया कि हम जुम्अ: इस तरह नहीं पढ़ रहे हैं। ख़ुत्बा सुन रहे हैं आप पहले ख़ुत्बा सुनकर तो देखें। इस पर उन्होंने ख़ुत्बों में दिलचस्पी लेनी शुरू कर दी। अब कुछ हफ़्ते पहले वह अपनी फ़ैमिली सहित आए और बैअत कर ली। कहते थे कि ख़लीफतुल मसीह के ख़ुत्बों ने मुझे हिला कर रख दिया। आज अगर इस्लाम की शिक्षा किसी के पास है तो वह ख़लीफतुल मसीह के पास है और जिस तरह आप अपने ख़ुत्बों और ख़िताबों के द्वारा मुसलमानों की तरक़्क़ी और रहनुमाई कर रहे हैं यूं लगता है कि हमारे दिलों के समस्त राज़ आपके पास हैं। यह यक़ीनन अल्लाह तआला की तरफ़ से मार्ग दर्शन है और मैं अपने बीवी बच्चों सहित जमाअत अहमदिया में दाख़िल हो के इस्लाम की वास्तविक शिक्षा के अधीन अपनी ज़िन्दगी गुज़ारना चाहता हूँ।

सहारनपुर इंडिया से एक साहिब अख़तर साहिब अपनी अहमदियत स्वीकार करने की घटना सुनाते हैं , कहते हैं मैंने 2007 में ख़वाब में एक बुज़ुर्ग को देखा जिसका चेहरा बहुत नूरानी था जिसने उनके दिल पर गहरा प्रभाव छोड़ा। फिर कहते हैं जब मैं 2009 में पाकिस्तान गया तो वहां जमाअत अहमदिया के विरोध का वर्णन सुना जिस पर तलाश हुई कि आख़िर यह जमाअत कौन सी है। तहक़ीक़ करने पर मुझे जमाअत अहमदिया का टोल फ्री नम्बर मिला। और मैंने जमाअत के साथ सम्पर्क क्या। कहते हैं इसी दौरान एक और ख़वाब आई जिसमें मैंने ख़लीफतुल मसीह अल-ख़ामिस को देखा। वह एक तख़्त पर बैठे हुए हैं और बैअत लेते हैं। बहुत से लोग आपके हाथ पर हाथ बढ़ाते हैं और बैअत में शामिल होते हैं।कहते हैं मैं भी हाथ बढ़ाता हूँ तो पहुंच नहीं पाता और मुझे पीछे से आवाज़ें आती हैं कि तू नहीं पहुंच सकता। कहते हैं इस ख़वाब के बाद मेरी बेचैनी और अधिक बढ़ गई और मैं दुआ करता और टोल फ्री से सम्पर्क कर के अपनी शंकाओं तथा सन्दोहों को दूर करता रहा। उन्हें दिनों एक और ख़्वाब आई कि एक क़ाफ़िला है जो मस्जिद अक़्सा की तरफ़ जा रहा है और कोई आवाज़ लगाता है कि तू नहीं पहुंच सकता। मगर मैं फिर भी कोशिश करता हूँ और इस क़ाफ़िला में शामिल हो जाता हूँ और बैअत का वही नज़ारा जो मैंने पहले देखा था ,देखता हूँ। लेकिन जब बैअत के लिए अपना हाथ उठाता हूँ तो ख़लीफतुल मसीह मेरी कलाई को पकड़ कर अपने हाथ में रख देते हैं। इस ख़वाब के बाद मैंने कादियान की ज़यारत की और बहुत अच्छा प्रभाव प्राप्त किया। लेकिन कुछ ज़ाती समस्याओं के कारण से बैअत करने का साहस न कर सका। और फिर कुछ समय बाद सम्पर्क भी स्थापित न रहा। वक़्त यूँही गुज़रता गया लेकिन यह ख़्वाबें मैंने देखी थीं और अहमदी दोस्त से कुछ समस्याएं पर गुफ़्तगु हुई थी इस से दिल में एक कसक और बेचैनी सी रहती थी। कहते हैं अन्त में एक लंबे वक़फ़े के बाद इस साल में सैर तथा घूमने लिए शिमला गया तो वहां के बुक फेयर में जमाअत अहमदिया का एक स्टाल लगा हुआ देखा और बुक फेयर के द्वारा दोबारा जमाअत से सम्पर्क हो गया। और इस बार पूर्ण इत्मीनान और ख़्वाबों के आधार पर मैंने बैअत कर ली। और जमाअत में शामिल हो गया।

अमीर साहिब माली लिखते हैं कि माली के क्षेत्र कोली कौरव के एक गावं में इस साल जमाअत की स्थापना हुई। इस से पहले गावं वाले लोग अधर्म थे। उन का कोई धर्म नहीं था लेकिन अल्लाह के फ़ज़ल से उन्होंने हमारी तब्लीग़ के बाद अहमदियत स्वीकार कर ली। इस गावं में मस्जिद नहीं थी। अब जमाअत वहां मस्जिद बनाने की तैय्यारी करवा रही है। मस्जिद के बुनियाद के अवसर पर गावं के चीफ़ ने बताया कि हम बहुत समय से इमाम महदी की जमाअत की प्रतीक्षा थे और वह कहने लगे कि यह उनकी ख़ुशक़िस्मती है कि अल्लाह तआला ने उन्हें अपनी ज़िन्दगी में अहमदियत स्वीकार करने की तौफ़ीक़ दी क्योंकि उन के पिता भी इसी इंतिज़ार में रहे कि इमाम महदी ने आना है तो इस को स्वीकार करना है लेकिन उनकी ज़िन्दगी में इन तक पैग़ाम पहुंच नहीं सका था

घाना के नॉर्दन क्षेत्र के मुबल्लिग़ लिखते हैं कि एक क्षेत्र नसूहना है जहां अहले सुन्नत काफ़ी अधिक प्रभाव रखते हैं नॉर्थ में मुसलमान काफ़ी हैं। वहां सुन्नी बड़े सख़्त विरोधी हैं वे मिस्र से एक आलिम को फरवरी 2019 ई में लेकर आए। ताकि जहां जहां नई जमाअतें स्थापित हुई हैं वहां उस के द्वारा अहले सुन्नत की मस्जिदें स्थापित की जाएं और पानी के नलके लगाऐं क्योंकि वहां जमाअत अहमदिया पानी के नलके लगाती है ताकि लोग अहमदियत छोड़कर उनके साथ मिल जाएं। इसी तरह उन्होंने इमाम भी निर्धारित कर दिए जिनकी तीन सौ सी डी जो वहां की करंसी है तनख़्वाह निर्धारित की। मिस्री आलम ने अपने लिए सात सौ सी डी पर अनुवादक भी रखा। और यह लोग समस्त क्षेत्र में दौरे करने लग गए। कहते हैं रमज़ानुल मुबारक के आरम्भ में अनुवादक ने मिस्री आलम के पैसे चोरी कर लिए। वहां मिस्री आलिम पैसे भी लेकर आया था। मिस्री आलम के लिए जो अनुवादक था इस को इस इमाम से भी अधिक तनख़्वाह मिलती थी। तो बहरहाल काफ़ी रक़म थी। इस्लाम अहमदियत के ख़िलाफ़ जो विभिन्न हुकूमतें मदद करती हैं उनकी भी कर रही होंगी। तो उनका अनुवादक उस की रक़म चोरी कर के ले गया। इस आलिम ने मिस्र से जो आए हुए थे उसे बहुत समझाया कि मेरे पैसे जो तुम ने चोरी किए हैं वापस कर दो। लेकिन उसने पैसे वापस नहीं किए। इस पर इस मिस्री आलम ने इस अनुवादक़ से सम्बन्ध विच्छेद कर लिया और इस के घर से एक दूसरे घर शिफ़्ट हो गया। अनुवादक़ ने ग़ुस्से में आकर इस पर छुरी से हमला कर दिया जिसकी वजह से वह मिस्री आलिम वहां से अपने देश वापस भाग गया और इस तरह अल्लाह तआला ने उनके जो हमारे ख़िलाफ़ इरादे थे कि यहां से अहमदियत को ख़त्म कर देंगे , अहमदियत को क्या ख़त्म करना था ख़ुद ही वहां से भाग गए।

लाइबेरिया की बूमी काओनटी के मुबल्लिग़ लिखते हैं कि किस तरह विरोधियों की नाकामी तथा असफलता हो रही है। कहते हैं हम एक गावं बीफ़ीनी में तब्लीग़ के लिए गए। यह गावं अपने इर्द-गिर्द के देहातों से थोड़ा बड़ा है और क्षेत्र में इस को मर्कज़ी हैसियत प्राप्त है। तब्लीग़ के बाद उनको मार्च 2019 ई में होने वाले जलसा सालाना लाइबेरिया में शामिल होने की दावत दी गई। अत: जलसा सालाना पर वहां से एक पाँच सदस्यों का वफ़द शामिल हुआ। जिसमें उनके इमाम और पैरा माऊंट चीफ़ भी शामिल थे। तब्लीग़ और फिर जलसा के माहौल से प्रभावित हो कर उन्होंने बैअत करने का ऐलान कर दिया। नौ मुबाईन की तर्बीयत के लिए जमाअत

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2020-2022 Vol. 5 Thursday 18 June 2020 Issue No.25

MANAGER :
NAWAB AHMAD
Tel. : +91- 1872-224757
Mobile : +91-94170-20616
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com

ANNUAL SUBSCRIBTION: Rs. 500/- Per Issue: Rs. 10/- WEIGHT- 20-50 gms/ issue

की तरफ़ से वहां एक लोकल मुअल्लिम को रख दिया गया, जिस ने जाते ही वहां तालीमुल क़ुरआन की क्लासिज़ शुरू कर दें और बच्चों को नमाज़ और दूसरी धर्म की बातें सिखानी शुरू कर दीं। इसी दौरान में जब विरोधियों को मालूम हुआ कि अहमदियत का इस क्षेत्र में स्थापना हुई है उन्होंने एक वफ़द के रूप में इस गावं में जाने का प्रोग्राम बनाया जिसमें सब से आगे बूमी काऊंटी के ग़ैर अहमदियों का चीफ़ इमाम था। जब यह लोग पहुंचे तो पैरा माऊंट चीफ़ से मिलकर उस को क़ाइल करने की कोशिश की कि अहमदी अच्छे मुसलमान नहीं हैं। पहले तो पैरा माऊंट चीफ़ ने इन से काफ़ी बार नर्मी से पूछा कि मुझे कोई ऐसी बात तो बताओ जिस से यह साबित हो कि अहमदी अच्छे मुसलमान नहीं हैं। इस पर मौलवी ने कहा कि यह क़ुरआन नहीं मानते और सिर्फ आप लोगों को यह बेवक़ूफ़ बना रहे हैं कि हम क़ुरआन मानते हैं। इस पर चीफ़ को ग़ुस्सा आ गया और उसने उनको सम्बोधित कर के कहा कि पिछले बीस साल में तुम में से कोई भी हमारे गावं नहीं आया कि हमें क़ुरआन पढ़ाओ। अब अहमदी आए हैं तो उन्होंने हमें धर्म सिखाना शुरू किया है। और क़ुरआन पढ़ा रहे हैं तो तुम अब रोकने के लिए पहुंच गए हो। अत: अहमदी हमें बेवक़ूफ़ नहीं बना रहे बल्कि तुम बेवक़ूफ़ बनाने आए हो। इसलिए तुम सब यहां से फ़ौरन चले जाओ और आगे हरगिज़ इस गांव में क़दम न रखना। उन्होंने कहा कि हम जमाअत अहमदिया के साथ आज भी हैं आगे भी रहेंगे। अत: विरोधी वहां से असफल लौटे। अब इस गांव के लोग पहले से भी अधिक इख़लास और वफ़ा का नमूना दिखला रहे हैं और बाक़ायदगी से चन्दे के निज़ाम में भी शामिल हैं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि ख़ुदा तआला अपने बंदों का सहायत होता है। दुश्मन चाहते हैं कि उनको असफल करें मगर वह दिन प्रतिदिन तरक़्क़ी पाते हैं और अपने दुश्मनों पर ग़ालिब आ जाते हैं। जैसा कि उसका वादा है كَتَبَ اللّٰهُ لَاَغْلِبَنَّ اَنَا وَرُسُلِیْ- अर्थात ख़ुदा तआला ने लिख दिया है कि में और मेरे रसूल ज़रूर ग़ालिब रहेंगे। पहले पहले जब इन्सान ख़ुदा तआला से सम्बन्ध शुरू करता है तो इस की नज़रों में तुच्छ और अपमानित होता है मगर जैसे-जैसे वह इलाही सम्बन्धों में तरक़्क़ी करता है वैसे वैसे उस की शौहरत अधिक होती है। यहां तक कि वह एक बड़ा बुज़ुर्ग बन जाता है।

फिर आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि मैं ख़ुदा से विश्वसनीय इल्म पाकर कहता हूँ कि अगर यह समस्त मौलवी और उनके सज्जादा नशीन , उनके मुलहम इकट्ठे हो कर इल्हामी मामले में मुझसे मुक़ाबला करना चाहें तो ख़ुदा इन सब के मुक़ाबला पर मेरी फ़तह करेगा क्योंकि में ख़ुदा की तरफ़ से हूँ।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया यह बात यक़ीनी है कि अब इस्लाम का ग़लबा मसीह मौऊद के द्वारा से ही होना है। अल्लाह तआला ने यह ग़लबा प्रदान फ़रमाना है और जैसा कि घटनाओं से प्रकट है कुछ एक घटनाएं मैंने वर्णन की हैं कि अजीब अजीब तरीक़ों से अल्लाह तआला लोगों की रहनुमाई फ़र्मा रहा है। और लोग हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की जमाअत में शामिल हो रहे हैं। लेकिन अगर हम जो पुराने अहमदी हैं जिन को अहमदियत में एक समय गुज़र गया है इन बरकतों का हिस्सा बनना चाहते हैं जो इस से जुड़े हैं तो हमें भी इस पैग़ाम के पहुंचाने में अपनी भरपूर भूमिका अदा करनी होगा। इसी तरह जो नए आने वाले हैं इन बरकतों से फ़ैज़ पाने के लिए अपने इस पैग़ाम को जो उनके सुधार का कारण बना जिसने उनकी हक़ की तरफ़ रहनुमाई की उनको दूसरों तक पहुंचाना चाहिए और तब्लीग़ के मैदान में पहले से बढ़कर कोशिश करनी चाहिए। अल्लाह तआला सबको उस की तौफ़ीक़ प्रदान फरमाए और अल्लाह तआला के मसीह के मददगार बन कर हम अल्लाह तआला के फ़ज़लों को प्राप्त करने वाले और जज़ब करने वाले हों

हुज़ूर अनवर का ख़िताब 5 बजकर 15 मिनट तक जारी रहा। इसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने दुआ करवाई।

दुआ के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने जलसा की कुल हाज़िरी का ऐलान फ़रमाया कि अमीर साहिब की तरफ़ से जो हाज़िरी की रिपोर्ट मिली है इस के अनुसार जमाअत फ्रांस की हाज़िरी 1441 है। ग़ैर अज़ जमाअत की संख्या 130 है। मर्दों की कल संख्या 1638 है औरतों की 1095 है। इस तरह कुल हाज़िरी 2733 है। यहां भी पड़ोसी और दूसरे 21 देशों की प्रतिनिधित्व है

इस के बाद ख़ुद्दाम और इत्फ़ाल के विभिन्न ग्रुपों ने बारी बारी दुआइया नज़्में और तराने प्रस्तुत किए। सबसे पहले अरब नौजवानों ने अरबी भाषा में क़सीदा प्रस्तुत किया। इस के बाद ख़ुद्दाम ने उर्दू भाषा में एक दुआइया नज़्म प्रस्तुत की। इसके बाद बंगाली नौजवानों ने बंगला भाषा में एक तराना प्रस्तुत किया। इसके बाद इत्फ़ालुल अहमदिया ह फ्रांस के एक ग्रुप ने ख़ुश-अल्हानी के साथ नज़्म

हम अहमदी बच्चे हैं कुछ कर के दिखा देंगे
शैताँ की हुकूमत को दुनिया से मिटा देंगे

प्रस्तुत की

इस के बाद ख़ुद्दाम के एक ग्रुप ने पंजाबी भाषा में नज़्म प्रस्तुत की। इसके बाद वाकफ़ीन नौ के ग्रुप ने दुआइया नज़्म प्रस्तुत की। आख़िर पर अफ्रीकन दोस्त ने मिलकर अपने विशेष अंदाज़ में अपना प्रोग्राम प्रस्तुत किया और कलिमा तय्यबा का विर्द किया और आख़िर पर बड़े भरपूर और पुरजोश अंदाज़ में नारा तकबीर बुलन्द किए। इस प्रोग्राम के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ अपनी रिहायश गाह पर तशरीफ़ गए।

(शेष.....)

☆ ☆ ☆

पृष्ठ 1 का शेष

मैं फिर तुम्हें बतलाता हूँ कि अगर ख़ुदा तआला से सच्चा सम्बन्ध,हक़ीक़ी वास्ता क़ायम करना चाहते हो तो नमाज़ पर अनुकरण करने वाले बन जाओ और ऐसे करने वाले बनो कि तुम्हारा जिस्म न तुम्हारी ज़बान बल्कि तुम्हारी रूह के इरादे और भावना सब के सब साक्षात नमाज़ हो जाएं।

इस्मते इंबिया का यही भेद है अर्थात नबी क्यों मासूम होते हैं ? तो इस का यही जवाब है कि वे अल्लाह तआला में लीन होने के कारण मासूम होते हैं। मुझे आश्चर्य होता है जब इन क़ौमों को देखता हों जो शिर्क में पड़े हैं जैसे हिंदू जो किस्म किस्म के बुतों की उपसाना करते हैं यहां तक कि उन्होंने औरत और मर्द के विशेष अंगों तक की उपासना भी जायज़ कर रखी है और ऐसा ही वे लोग जो एक इन्सानी लाश अर्थात यसू मसीह की उपासना करते हैं। इस किस्म के लोग विभिन्न तरीकों से मुक्ति को प्राप्त करने के क़ाइल हैं जैसे प्रथम दिन का वर्णन किया गया अर्थात हिंदू गंगा नहाने और तीर्थ यात्रा और ऐसे ऐसे कुफ़्फ़ारों से गुनाह से मोक्ष चाहते हैं और ईसा परस्त ईसाई मसीह के ख़ून को अपने गुनाहों का फ़िद्या क़रार देते हैं मगर मैं कहता हूँ कि जब तक नफ़्स गुनाह मौजूद है वह बाहरी सफ़ाई और बाहरी आस्थायों से राहत या सन्तोष का माध्यम क्योंकर पा सकते हैं जब तक अन्दर की सफ़ाई और भीतरी सफाई नहीं होती असंभव है कि इन्सान सच्ची पवित्रता जो इन्सान को नजात से मिलती है पा सके। हाँ इस से एक शिक्षा लो जिस तरह पर देखो, शरीर की मेल और बदबू सफ़ाई के बिना दूर नहीं हो सकती और जिस्म को आने वाले ख़तरनाक बीमारियों से बचा नहीं सकती इसी तरह पर रुहानी गन्दगी और मैल जो दिल पर नापाकियों और विभिन्न प्रकार की बे बाक़ियों से जम जाती है दूर नहीं हो सकती जब तक तौबा का साफ और पाक पानी न धो डाले। जिस्मानी सिलसिला में एक फ़लसफ़ा जिस तरह पर मौजूद है इस तरह पर रुहानी सिलसिला में एक फ़लसफ़ा रखा हुआ है। मुबारक हैं वे लोग जो इस पर ग़ौर करते हैं और सोचते हैं।

(मल्फ़ूज़ात भाग 1 पृष्ठ 146 से 149 प्रकाशन 2008 कादियान)

☆ ☆ ☆

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad